नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक

बिगुल

मासिक समाचारपत्र • वर्ष 6 अंक 3
अप्रैल 2004 • तीन रुपये • बारह पृष्ठ

हाँ! हमें चुनना ही होगा!

जनतंत्र के इस ढकोसले और सच्ची लोकसत्ता के बीच!

सम्पादक

एक बार फिर हमसे कहा जा रहा है कि हमें चुनाव में फैसला करना है देश के और अपने भविष्य का। दावे किये जा रहे हैं कि हमें चुनना है खुशहाली और बदहाली के बीच, धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक नफरत के बीच, राष्ट्रीय स्वाभिमान और विदेशी पराधीनता के बीच, आदि-आदि। लेकिन ये दावे कितने सच हैं यह आप भी जानते हैं और हम भी।

सच तो यह है कि हम से कहा जा रहा है कि हम चुनें लम्पटों, लुटेरों, भ्रष्टाचारियों, व्यभिचारियों के इस या उस गिरोह को, थैलीशाहों के इस या उस टुकड़खोर को; जहरीले साँपों, भेड़ियों या लकड़बग्घों की इस या उस जमात को।

असलियत पहले भी यही थी मगर इस पर भ्रम के परदे पड़े हुए थे। लेकिन खास तौर से पिछले 20-25 वर्षों में यह सच्चाई ज्यादा से ज्यादा साफ होती गयी है कि यह जनतंत्र नहीं बल्कि बहुत निरंकुश किस्म का धनतंत्र है। जनता को बस यह चुनने की आजादी है कि अगले पाँच सालों तक कौन उसका खून निचोड़े, किसके हाथों से वह दर-बदर की जाये!

बेशक हमें चुनना तो होगा ही। लेकिन यह एक ज्यादा बुनियादी और अहम चुनाव होगा। हमें चुनना होगा इस सड़ाँधभरी यथास्थिति और इसके विकल्प के बीच, हमें चुनना होगा जनतंत्र के इस ढकोसले और सच्चे जनतंत्र के बीच, पूँजी की बर्बर सत्ता और इसके विकल्प के बीच।

लेकिन एक बार फिर लाशों के ढेरों पर पाँव रखता हुआ, खून-सनी गलियों से गुजरता हुआ दुनिया का सबसे खर्चीला और अश्लील नाटक हमारे सामने शुरू हो चुका है। 1952 में चुनावी खर्च महज डेढ़ करोड़ रुपये था जो अब बढ़ते-बढ़ते 1200 करोड़ रुपये तक पहुँच चुका है-और यह तो सिर्फ घोषित सरकारी खर्च है। यह पूरा खर्च जनता को ही तरह-तरह के टैक्स भरकर चुकाना होगा। पार्टियों और उम्मीदवारों द्वारा किया जाने वाला असली खर्च तो इससे दस गुने से भी ज्यादा होता है।

सभी पूँजीपति घराने सभी चुनावी पार्टियों को उनकी औकात के हिसाब से, और अपनी हितपूर्ति के हिसाब से, करोड़ों रुपये सफेद धन के रूप में चन्दे में देते हैं, जिसे वे अपनी कम्पनी के खर्च में दिखाते हैं। इससे कई गुना ज्यादा रकम काले धन के रूप में दी जाती है। इसके अलावा सभी पार्टियों के उम्मीदवार छोटे-बड़े व्यापारियों, घूसखोर अफसरों, ठेकेदारों, धनी फार्मरों, सटोरियों और तरह-तरह के काले धन्धे वालों से लेकर दुकानदारों तक से भारी वसूली करते हैं। बड़े पूँजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से लेकर व्यापारियों तक सभी इस खर्च की भरपाई अपने-अपने ढंग से जनता से ही करते हैं। पूँजीपति घराने चुनावी मदद के एवज में सरकार से लेकर विपक्षी सांसदों तक से अपने-अपने हित साधते हैं और विभिन्न निगमों, कमेटियों, संस्थाओं में पद हथियाते हैं। भारतीय उद्योगपतियों की संस्था सीआईआई के पूर्व अध्यक्ष राहुल बजाज ने कुछ वर्ष पूर्व यह खुलेआम स्वीकार किया था कि पूँजीपतियों की संस्थाएं फिक्की, एसोचैम और सीआईआई पूँजीपतियों के साझा हितों को लेकर सभी पार्टियों से सीधे बातचीत और मोलभाव करती हैं। यही काम विदेशी कम्पनियाँ भी करती हैं और साम्राज्यवादी देशों के दूतावास भी चुनावी समीकरण बनने-बिगड़ने में अहम भूमिका निभाते हैं।

इस चुनावी महाभारत में एअरकंडीशंड रथों पर सवार बौने महारथियों और उनके बदजबान प्रवक्ताओं ने झूठे वादों-आश्वासनों और गाली-गलौज की जो गन्दी धूल उड़ाई है उसने असली मुद्दे को ही ढँक लिया है। भारतीय संस्कृति की दुहाई देने वाली भाजपा और राष्ट्रीय आन्दोलन के असली वारिस बनने का दम भरने वाली कांग्रेस तक जो अश्लील धोती-खींच तमाशा पेश कर रही हैं उससे जनता का मनोरंजन तो हो रहा है पर बुनियादी सवाल पृष्ठभूमि में चला गया है। भयंकर बेरोजगारी पैदा करने और मेहनतकश जनता पर तबाही का कहर बरपा करने वाली आर्थिक नीतियों पर हर रंग की पार्टियों में सहमति है, यह तथ्य ही ओट में चला गया है। जनता को भरमाने और चकराने के लिए सफेद झूठों और अर्द्धसत्यों की आँधी बहाई जा रही है-सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च करके।

भगवाधारी भाजपा हो या तिरंगा उड़ाने वाली कांग्रेस, हरे-नीले-पीले झण्डे वाली तमाम क्षेत्रीय पार्टियाँ हों या लाल झण्डे को बेचकर संसद में सीट खरीदने वाले नकली वामपंथी-लुटेरी आर्थिक नीतियों के सवाल पर सबमें एकता है। यह तय है कि कोई भी सत्ता में आये नीतियों में बदलाव नहीं आयेगा। आर्थिक नीतियों का दूसरा दौर जोर-शोर से लागू होगा। पिछले एक साल के चुनावी मौसम में इसकी रफ्तार थोड़ी कम करनी पड़ी थी मगर अब नई आर्थिक नीतियों का बुलडोजर बेरोकटोक दौड़ेगा। विश्व व्यापार संगठन में किये गये सारे समझौते लागू किये जायेंगे। पानी-बिजली से लेकर दवाओं के दामों में भारी बढ़ोत्तरी होगी। यह भी तय है कि इस बदहाली के खिलाफ जनता जगह-जगह उठ खड़ी होगी। इसीलिए पोटा सहित दमन के सारे हथियार पहले ही चाक-चौबन्द कर लिये गये हैं।

तेईस दलों की बैसाखियों पर टिकी भाजपा सरकार जिस तरह जोड़-तोड़ और तीन-तिकड़म करके गिरते-पड़ते सवा चार साल चली उसे ही ये बेशर्मी से स्थिरता कह रहे हैं। लेकिन यह तय है कि आने वाली सत्ता

(पेज 8 पर जारी)

चुनने की आजादी

चुनाव करो!
तुम क्या पसन्द करोगे?
भेड़ियों के निवाले बनना
जहरीले साँपों से डसा जाना
गिद्धों-सियारों से नोचा-खसोटा जाना
या खूंखार मगरमच्छों का पेट भरना?
फिर चुनाव का समय आ गया है।
चुनने की आजादी है।
चुन लो!

मेहनतकश साथियो! नौजवान दोस्तो!
सोचो!
57 सालों तक
चुनावी मदारियों से
उम्मीदें पालने के बजाय
यदि हमने इंकलाब की राह चुनी होती
तो भगतसिंह के सपनों का भारत
आज एक हकीकत होता।

चुनाव एक धोखा है!
यह जनतंत्र धनियों का खेल है!
पूरा भारतीय समाज आज एक ज्वालामुखी के दहाने पर बैठा है!
यह उनके लिए सोचने का वक्त है, जिनका देश से रत्ती भर भी सरोकार है!
निराशा त्यागो! जड़ता से मुक्ति पाओ!
सोते और इन्तजार करते जमाना गुजर गया!
एक नये भारत के निर्माण के लिए एकमात्र रास्ता!
पूँजीवादी हुकूमत के नाश का रास्ता!
समाजवादी क्रान्ति का रास्ता!!

बजा बिगुल मेहनतकश जाग, चिंगारी से लगेगी आग!

आपस की बात

किसकी आजादी, किसका विकास

मैं 'बिगुल' नियमित पढ़ता हूँ। इसमें जो नई आजादी की लड़ाई की बात कही जाती है, वह मुझे एकदम सही और जरूरी लगती है। मैं जूता बनाने वाली एक कम्पनी में काम करता हूँ। एक दिन लंच में ऐसे ही आपस में बातचीत हो रही थी, मेरा एक साथी बोला-अब हम कहाँ गुलाम हैं। अब तो विदेशों में भी हमारा नाम है। अपने देश ने परमाणु बम बनाया है, राकेट छोड़ा है। अनाज का उत्पादन भी बढ़ गया है। अब हम विदेशों में सीना तान कर चल सकते हैं। उसकी बात पर मुझे हंसी आ गयी। मैंने सोचा अपनी कम्पनी में तो सीना तान कर चल नहीं सकते और विदेशों की बात कर रहे हो।

मैंने अपने साथी से कहा-सरकारी झूठ यानि 'फील गुड' का असर है यह। मेरे भाई, दुनिया की छोड़, अपनी कम्पनी की बात कर। कभी सुपरवाइजर बिना गाली दिये बात करता है! मालिक जब जिसको चाहे थप्पड़ मार देता है। हेल्पर, कारीगर, प्रेसमैन का कोई मतलब नहीं, जब मालिक जिसको जहाँ चाहे, वहाँ लगा देता है। कम्पनी से बाहर निकालना, पेट पर लात मार देना तो उसकी जुबान का खेल है। जुबान फिसली नहीं कि हम बाहर। पेमेण्ट ऐसे देता है कि जैसे हम बेगार कर रहे हों। दिहाड़ी काट लेना मालिक-मैनेजर तो दूर, सुपरवाइजर के बायें हाथ का खेल है। मेरी बात सुनकर वह चुप हो गया। सारा विकास, सारी अखबारी बातें हवा हो गईं। क्योंकि मैंने जो कुछ भी कहा, उसमें रत्तीभर भी झूठ नहीं था। हमारी जिन्दगी ऐसी ही जो है। इसीलिए मुझे 'बिगुल' की बात ठीक लगती है।

- रमेश
सेक्टर-8, नोएडा

एक कोशिश फिर करूँगा

साजिशों को तोड़ने की,
एक कोशिश फिर करूँगा।
रूढ़ि का दुर्दान्त वन है,
राह में काँटे उगे हैं
शोर है अभिव्यक्ति का,
पर घोर सन्नाटे उगे हैं
टूटना जिनका कठिन है,
आज हर चिन्तन मलिन है
सोच यह झकझोरने की,
एक कोशिश फिर करूँगा।
धर्म, भाषा जाति के गढ़,
देश को जो तोड़ते
न्याय का चोंगा पहनकर,
जो अखाड़े खोदते
तोड़ कर षड्यन्त्र उनका,
यह विभाजन तन्त्र उनका
आदमी को जोड़ने की,
एक कोशिश फिर करूँगा।
दर्द में डूबी सदी है,
धार में विष की नदी है
धार इसकी मोड़ने की,
एक कोशिश फिर करूँगा।
ठीक है निर्माण करती,
पथ प्रगति का क्रान्ति ही है
क्रान्ति का भी लक्ष्य अन्तिम,
पर धरा पर शान्ति ही है।

- अंचल द्विवेदी
हबीबुल्लाह छात्रावास, लखनऊ

एक चिट्ठी मारीशस से

मुझे 'बिगुल' नियमित मिल रहा है और अपने देश से दूर रहते हुए 'बिगुल' के माध्यम से देश के अन्दर चल रहे मजदूर साथियों के संघर्षों के बारे में जानकारियाँ मिल रही हैं। 'बिगुल' मुझ हमेशा प्रेरित करता है और शिक्षा देता है कि जहाँ कहीं भी मैं हूँ, मजदूरों को एकजुट और संगठित करूँ और इस बर्बर मानवद्रोही, श्रम परजीवी पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए अपना जीवन लगा दूँ। 'बिगुल' सोयी हुई आत्माओं के लिए ललकार है। एक चिंगारी है जो एक दिन मशाल बनेगी। आज जो मजदूरों के अन्दर धधकता हुआ आक्रोश है वह आक्रोश एक दिन ज्वालामुखी बनकर फूटेगा और इस बर्बर अत्याचारी धनपिपासु व्यवस्था का अन्त करेगा। 'बिगुल' मुझे इसी दिशा में उत्प्रेरित करता है कि यहाँ मजदूर साथियों को एकजुट करूँ और क्रान्ति की चिंगारी को पूरी दुनिया में फैलाया जाये। क्योंकि अपने देश के मजदूरों के आज जो हालात हैं वही सारी दुनिया के मजदूर साथियों के हैं।

यहाँ इस छोटे से टापू में भारत और चीन के कई हजार प्रवासी मजदूर काम करते हैं, जिनमें से मैं एक हूँ। हालात यह हैं कि 12-14 घण्टे काम करके मात्र 8-9 हजार रुपये यहाँ कमा पाते हैं। वैसे तो काम के घण्टे एक हफ्ते में केवल 45 घण्टे हैं लेकिन पैसे कम मिलते हैं, इसलिए 85-90 घण्टे काम करना पड़ता है। चीनी वर्कर, जो ज्यादातर महिलाएं और लड़कियाँ हैं, बहुत बड़ी संख्या में यहाँ काम करती हैं और बहुत ज्यादा मेहनत वाला काम करती हैं, जो हम इण्डियन नहीं कर सकते। वे सुबह 7.30 से लेकर रात के 12 बजे तक रोज काम करती हैं। यह सिर्फ मेरी कम्पनी में ही नहीं, मारीशस की लगभग हर उस कम्पनी के हालात हैं जहां चीनी मजदूर हैं।

मजदूर एकता यहाँ नाममात्र की है। हमारे एग्रीमेण्ट में लिखा है कि हम मैनेजमेण्ट के खिलाफ यदि हड़ताल या विरोध करते हैं तो हमारा एग्रीमेण्ट टूट जायेगा और वापस जाना पड़ेगा। इसलिए यहाँ हम कोई एकता नहीं बना सकते, विरोध नहीं कर सकते।

कई कम्पनियों में तो मजदूरों के सर पर टारगेट वर्क लादा हुआ है जो बड़ी मुश्किल से पूरा होता है। कड़ी मेहनत करके। यहाँ के मजदूर भी 9 घण्टे सोम से शुक्र तक काम करके एक माह में मात्र 3000-3500 रु. कमा पाते हैं जिससे उनका गुजारा मुश्किल से चलता है। यहाँ महँगाई इतनी है कि परिवार के सभी सदस्यों को काम करना पड़ता है। यहाँ की लड़कियाँ और स्त्रियाँ स्वावलम्बी हैं और भारतीय स्त्रियों से भिन्न हैं। घर की चहारदीवारी से बाहर हैं।

- प्रमोद
फ्लोरियाल, मारीशस

बिगुल के पाठक साथियों और शुभचिन्तकों से एक अपील

'बिगुल' के पिछले सात वर्षों का सफर तरह-तरह की कठिनाइयों-चुनौतियों से जूझते गुजरा है। इस दौरान अनेक नये हमसफर हमारी टीम से जुड़े हैं और पाठक-साथियों का दायरा भी काफी बढ़ा है। कहने की जरूरत नहीं कि अब तक का कठिन सफर हम अपने हमसफरों और शुभचिन्तकों के संग-साथ के दम पर ही पूरा कर सके हैं। हालात संकेत दे रहे हैं कि आगे का सफर और अधिक कठिन और चुनौती भरा ही नहीं बल्कि जोखिमभरा भी होगा। हमें विश्वास है कि हम अपने दृढ़संकल्प और हमसफर दोस्तों की एकजुटता के दम पर आगे ही बढ़ते रहेंगे।

'बिगुल' अपने पुरअसर तेवर और अपने विशिष्ट जुझारू अंदाज के साथ आपके पास नियमित पहुंचता रहे, इसके लिए अखबार के आर्थिक पहलू को और अधिक पुख्ता बनाना जरूरी है। जाहिर है कि यह अपने संगी-साथियों और शुभचिन्तकों की मदद के बिना मुमकिन नहीं। हमारी आपसे पुरजोर अपील है कि :

- **बिगुल के स्थायी कोष के लिए अधिकतम संभव आर्थिक सहयोग भेजें।**
- **जिन साथियों की सदस्यता समाप्त हो चुकी है वे यथाशीघ्र नवीनीकरण करा लें।**
- **बिगुल के नये सदस्य बनायें।**
- **बिगुल के वितरण को और व्यापक बनाने में सहयोग करें।**
- **कुछ वितरक साथियों के पास बिगुल के कई अंकों की राशि बकाया है। इसे यथाशीघ्र भेजकर बिगुल नियमित प्राप्त करना सुनिश्चित कर लें।**

सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से सम्पादकीय कार्यालय के पते पर भेजें। बैंक ड्राफ्ट 'बिगुल' के नाम से भेजें।

-सम्पादक

बिगुल का स्वरूप, उद्देश्य और ज़िम्मेदारियां

1. 'बिगुल' व्यापक मेहनतकश आबादी के बीच क्रान्तिकारी राजनीतिक शिक्षक और प्रचारक का काम करेगा। यह मज़दूरों के बीच क्रान्तिकारी वैज्ञानिक विचारधारा का प्रचार करेगा और सच्ची सर्वहारा संस्कृति का प्रचार करेगा। यह दुनिया की क्रान्तियों के इतिहास और शिक्षाओं से, अपने देश के वर्ग संघर्षों और मजदूर आंदोलन के इतिहास और सबक से मजदूर वर्ग को परिचित करायेगा तथा तमाम पूँजीवादी अफवाहों-कुप्रचारों का भण्डाफोड़ करेगा।

2. 'बिगुल' देश और दुनिया की राजनीतिक घटनाओं और आर्थिक स्थितियों के सही विश्लेषण से मजदूर वर्ग को शिक्षित करने का काम करेगा।

3. 'बिगुल' भारतीय क्रान्ति के स्वरूप, रास्ते और समस्याओं के बारे में क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों के बीच जारी बहसों को नियमित रूप से छापेगा और स्वयं ऐसी बहसें लगातार चलायेगा ताकि मजदूरों की राजनीतिक शिक्षा हो तथा वे सही लाइन की सोच-समझ से लैस होकर क्रान्तिकारी पार्टी के बनने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें और व्यवहार में सही लाइन के सत्यापन का आधार तैयार हो।

4. 'बिगुल' मजदूर वर्ग के बीच लगातार राजनीतिक प्रचार और शिक्षा की कार्रवाई चलाते हुए सर्वहारा क्रान्ति के ऐतिहासिक मिशन से उसे परिचित करायेगा, उसे आर्थिक संघर्षों के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के लिए भी लड़ना सिखायेगा, दुअन्नी-चवन्नीवादी भूजाछोर "कम्युनिस्टों" और पूँजीवादी पार्टियों के दुमछल्ले या व्यक्तिवादी- अराजकतावादी ट्रेड्यूनियनबाजों से आगाह करते हुए उसे हर तरह के अर्थवाद और सुधारवाद से लड़ना सिखायेगा तथा उसे सच्ची क्रान्तिकारी चेतना से लैस करेगा। यह सर्वहारा की कतारों से क्रान्तिकारी भरती के काम में सहयोगी बनेगा।

5. 'बिगुल' मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी शिक्षक, प्रचारक और आह्वानकर्ता के अतिरिक्त क्रान्तिकारी संगठनकर्ता और आन्दोलनकर्ता की भी भूमिका निभायेगा।

राहुल फाउण्डेशन का नया प्रकाशन

बोल्शेविक पार्टी का इतिहास

जे.वी. स्तालिन द्वारा लिखित और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति के एक आयोग द्वारा सम्पादित यह पुस्तक सोवियत संघ में 1938 में छपी थी। यह पुस्तक दुनियाभर के कम्युनिस्टों के लिए एक अनिवार्य पाठ्यपुस्तक रही है, और आगे भी रहेगी। यह पुस्तक कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मजदूर वर्ग द्वारा समाजवाद के लिए सफल संघर्ष और समाजवादी निर्माण के अनुभवों और सबकों का निचोड़ प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक हमें पूँजी और श्रम के बीच जारी विश्व ऐतिहासिक महासमर में समाजवाद की अपरिहार्य विजय में विश्वास पैदा करती है। निम्न-पूँजीवादी पार्टियों-गुटों, सभी प्रकार के अवसरवादियों, आत्मसमर्पणवादियों, जनता के दुश्मनों और पार्टी के भीतर वामपंथी दुस्साहसवाद तथा दक्षिणपंथी अवसरवाद की प्रवृत्तियों के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष चलाते हुए तपकर निखरी बोल्शेविक पार्टी का यह इतिहास हर देश के क्रान्तिकारियों के लिए एक प्रकाशस्तम्भ है।

पृ. 360 मूल्य : 80 रुपये

प्रतियों के लिए जनचेतना के केन्द्रों से संपर्क करें

**फिर चुनाव?
क्या अब भी कोई उम्मींद
बाकी बची है?
रोज-रोज तुम अपनी ही
कब्र खोदते रहोगे
तो इस जालिम हुकूमत की
कब्र कौन खोदेगा?
चुन लो,
कौन सी राह?
इलेक्शन या इंकलाब?**

नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक बिगुल

सम्पादकीय कार्यालय	: 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006
सम्पादकीय उपकार्यालय	: जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ
दिल्ली सम्पर्क	: 29, यू.एन.आई. अपार्टमेण्ट, जीएच-2, सेक्टर-11, वसुंधरा,गाजियाबाद-201010
ईमेल	: bigulakhbar@hotmail.com

मूल्यः एक प्रति-रु. 3/- वार्षिक-रु. 40.00 (डाक खर्च सहित)

बिगुल

'जनचेतना' की सभी शाखाओं पर उपलब्ध :

1. डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020
2. जनचेतना स्टाल, काफी हाउस बिल्डिंग, हजरतगंज, लखनऊ (शाम 5 से 8 बजे तक)
3. जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001
4. 989, पुराना कटरा, यूनिवर्सिटी रोड, मनमोहन पार्क, इलाहाबाद
5. जनचेतना सचल स्टाल (ठेला) चौड़ा मोड़, नोएडा (शाम 5 से 8)

मेहनतकश साथियों के लिए जरूरी कुछ पुस्तकें

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा -लेनिन 5/-
मकड़ा और मक्खी -विल्हेल्म लीब्कनेख्त 3/-
ट्रेड यूनियन काम के जनवादी तरीके -सर्जी रोस्तोवस्की 3/-
अनवश्वर है सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएं 10/-
समाजवाद की समस्याएं, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति 12/-
क्यों माओवाद? 10/-
बुर्जुआ वर्ग पर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में 5/-
मई दिवस का इतिहास 5/-
अक्टूबर क्रान्ति की मशाल 12/-
पेरिस कम्यून की अमर कहानी 10/-

बिगुल विक्रेता साथी से मांगें या इस पते पर 17 रु. रजिस्ट्री शुल्क जोड़कर मनीआर्डर भेजें:
जनचेतना, डी-68, निराला नगर, लखनऊ।

आपस की बात

कारखाने की जिन्दगी के कुछ अनुभव

चमचा न. वन उर्फ स्टार नं. वन

फिल्मों में लफंगा नं. वन को हीरो नं. वन दिखाया जाता है। ऐसे ही कई कारखाने हैं जहाँ चमचा नं. वन को 'स्टार ऑफ द मन्थ' या 'स्टार ऑफ द इयर' का खिताब दिया जाता है। जालिम मालिकों की नजर में 'स्टार' कौन हो सकता है, आप समझ सकते हैं। अगर आप कारखाने में काम करते हैं या कभी किया है तो इसे अच्छी तरह समझ जायेंगे। अगर आप यह मानते हैं कि दुनिया में जो कुछ भी पैदा होता है, उसकी नींव में मजदूर का खून-पसीना है तो आप भी 'स्टार' वाला मामला समझ सकते हैं। लेकिन यदि आप खुद 'स्टार' बनने के लिए मिमिया रहे हैं और 'स्टारों' को पूजते हैं और समझते हैं बिना 'स्टारों' के दुनिया चल ही नहीं सकती, तो मुश्किल होगी। बहरहाल, आपको अलग-अलग कारखानों में काम करने के दौरान हुए कुछ अनुभवों को बताता हूँ।

सबसे पहले तो 'स्टार' चुने जाने की शर्तों पर नजर डाल लें। वह समय से पहले काम शुरू करे और छुट्टी होने के बाद तक काम करता रहे। आधे घण्टे के लंच टाइम में पांच मिनट बाद लंच करे और पांच मिनट पहले ही काम शुरू कर दे। काम जितना करे उससे ज्यादा दिखावा करे। बॉस या सुपरवाइजर जितना डांटे, जितनी गाली दे या मारे, फिर भी तहेदिल से उसका आदर करे। अगर बॉस या सुपरवाइजर एक बार पुकारे तो वह तीन बार हाँ जी बॉस जी, हाँ जी बाबू जी, हाँ जी बाबू जी, हाँ जी सर जी करे और उसके तलवे चाटने शुरू कर दे। बॉस के खाने का झूठा डिब्बा साफ करे। छुट्टी वाले दिन बॉस के घर पर किसी भारी काम में हाथ बंटाये। बॉस के लिए खाना लेकर आये। लंच टाइम में मूंगफली का दाना या नमकीन लेकर आये। अगर लंच में बॉस फैक्ट्री से बाहर मिल जाये तो एक मीठा पान लेकर उसके मुंह में रखे या फिर एक सिगरेट जलाकर उसकी उंगलियों में सजाए।

'स्टार' बनने के लिए सबसे खतरनाक और सबसे जरूरी बात यह है कि वह अपने ही मजदूर भाइयों से गद्दारी करे, उनकी शिकायत बॉस से करे। एक नम्बर का चुगलखोर बन जाये। तभी बॉस समझेगा चेला तो है मेरा ही। गंगा स्नान किये हुए है बिलकुल। ऐसी ही अन्य तमाम शर्तें पूरी करने के बाद ही उस पर 'स्टार ऑफ द मन्थ' या 'स्टार ऑफ द इयर' का ठप्पा लग सकता है। रही बात कुछ मिलने की, तो एकाध बार चाय और नाश्ता फ्री मिल जाता है। कम्पनी स्टार की मोहर लगाकर उसका फोटो लगा सकती है। इस मौके पर मकड़ा मतलब मैनेजर लोग आकर मेल-मिलाप व भाईचारे की मीठी-मीठी बातें हाँक जाते हैं। इसके बाद से वह मजदूर अन्य मजदूरों से अलग-थलग हो जाता है। अपने ही भाइयों में अविश्वासी और गद्दार कहलाता है। मजदूर भाई आपस में चमचा-चमचा कहकर उसका मजाक उड़ाते हैं और उसे गालियां भी देते हैं।

'स्टार' कारखाने में 'न घर का, न घाट का' होकर रह जाता है। यदि कभी वह अपनी सेलरी बढ़वाने की बात करे तो उसका नाम स्टारों में से काट दिया जायेगा, उसके पेट पर लात भी मारी जा सकती है।

जब मैं पहली बार कारखाने में काम करने गया तो डिपार्टमण्ट के दस-बारह साथियों में तीन ऐसे साथियों से मुलाकात हुई, जिनकी शक्ल एकदम दुखियारों जैसी थी। दुखियारे साथियों में से दो एक-दूसरे की शिकायत करने का मौका देखते रहते थे। तीसरा मजदूर साथी जिसकी अलग से अपनी पहचान थी कि वह जितनी दुखियारी बातें करता था, उतना ही खुश भी रहता था और साथ में औरों को भी खुश रखता था। करीब चार-पाँच दिन बाद वह मुझसे बोला-बोलो दोस्त तुम किसके चमचे बनोगे? मेरे या फोरमैन के? उस वक्त फोरमैन भी वहीं था। मुझे यह बात अजीब सी लगी। मैंने सोचा कि हो सकता है यहाँ के नियम-कानून में चमचा बनना जरूरी होता होगा। अगर सभी के सभी इसी तरह के हुए तो फिर यहाँ रहना बड़ा मुश्किल होगा। मैंने उस मजदूर से ऐसे पूछा कि जैसे कुछ जानता ही न होऊँ-अरे भाई यह चमचा क्या होता है? वह कहने लगा-लो तुम्हें चमचे का भी नहीं पता कि क्या होता है? अरे जैसे मैं फोरमैन जी का चमचा हूँ। उनकी हर बात मानता हूँ। उनके आगे-पीछे दौड़ता हूँ। याद रखो, अगर चमचे न बने तो टिक न पाओगे। फोरमैन, जो इस बातचीत का का मजा ले रहा था, नकली गुस्सा दिखाते हुए बोला-अच्छा अब जाकर चुपचाप अपना काम करो, समय बर्बाद मत करो।

कुछ दिन बाद वही तीसरा साथी बहुत दुखी नजर आया। कहने लगा-अरे भाई मैंने इन कुत्तों की बहुत चमचागिरी करी है, पर आज के बाद नहीं करूँगा। इनके जितने तलवे चाटो, उतना ही तंग करते हैं। अगर हम हड्डियाँ गलाकर काम करें, तो ठीक है और यदि मेहनत में थोड़ा फर्क हो जाये तो ऐसी-तैसी करके रख देते हैं। मेरे से बड़े चमचे की हालत तो देखो, काम करते-करते मुँह तेल और ग्रीस में सन जाता है, फिर भी उसे सुनने को मिलता है तो मैं किस खेत की मूली हूँ।

यह दवाई बनाने वाली कम्पनी थी, जहाँ कुछ ही दिनों के अंतर पर दो घटनाएं घटीं। इनके बारे में आपको बताता हूँ। दवाई बनाने में खतरनाक कैमिकल्स का प्रयोग होता है। एक दिन एक प्लाण्ट में आग लग गई। एक कैमिस्ट आग की चपेट में आ गया। वहाँ पर काम कर रहे लोग समझ नहीं पा रहे थे कि क्या किया जाय, तब तक एक ठेकेदारी वाले मजदूर ने बड़ी फुर्ती से आग बुझाने वाला सिलेण्डर उठाया और उस कैमिस्ट के ऊपर खाली कर दिया। ठेकेदारी वाले इस मजदूर की बहादुरी और साहस से कैमिस्ट की जान बच गई। ऐसे साहसी मजदूर को इनाम देने के बजाय कुछ दिन बाद उसे कम्पनी से निकाल दिया गया, क्योंकि वह ठेकेदार का मजदूर था।

इसके कुछ समय बाद ही इस कम्पनी में एक घटना और घटी। दवाई बनाने की मशीन में जो खाली थी, गर्म होने के कारण थोड़ा सा धुआँ उठ गया। वहाँ पर खड़े एक मजदूर ने धुएँ पर ही आग बुझाने वाला सिलेण्डर खाली कर दिया और आग-आग का हल्ला मचा दिया। इस वर्कर की वाह-वाही हो गई। दो-चार दिन बाद कम्पनी की मैगजीन में उसका नाम छप गया और 'स्टार' की मोहर लग गई क्योंकि वह चमचा जो था। उसे और उसके बॉस को नगद ईनाम भी दिया गया।

जुबान लड़ाने की सजा

कुछ दिन बाद यहाँ काम छोड़कर मैं नोएडा सेक्टर-57 की एक ब्रेक बनाने वाली फैक्ट्री में काम करने लगा। वहाँ पर मेरी मुलाकात एक बहुत मेहनती, लगनशील आदमी से हुई जिसके आगे के दो दाँत, हाथ की एक उंगली, पैर की हड्डी मेहनत-मजदूरी करने के दौरान टूट चुके थे। एक बार उसका सिर भी फट गया था और कमर में भी चोट थी। ये सारी चोटें उसे चालीस वर्ष की उम्र तक लग चुकी थीं। फिर भी वह अपनी मेहनत और लगन को बरकरार रखे हुए था। एक बार मालिक ने सभी मजदूरों को इकट्ठा कर यह घोषणा की कि ताराचन्द अपनी इच्छा और लगन से काम पर लगा रहता है। काम न होने पर भी काम की खोज कर उसे पूरा करता है। सफाई का भी विशेष ध्यान रखता है। इसलिए इसे कम्पनी का 'स्टार' चुना जाता है और इनाम के रूप में 'डिनर सैट' दिया जाता है। मालिक ने कहा कि आज के बाद जो भी मजदूर मेहनत के साथ बढ़-चढ़कर काम करेगा, उसे इनाम मिलेगा। यह प्रोग्राम हर माह किया जायेगा।

साथी ताराचन्द मैन्टेनेन्स का फिटर था। डिपार्टमेण्ट में छह वर्कर थे। ताराचन्द को अपने हिस्से के अलावा कोई और काम नहीं करना था। लेकिन एक दिन एक मैनेजर ने उसे दूसरे काम पर लगा दिया। ताराचन्द काम कर ही रहा था कि फैक्ट्री मालिक घूमता हुआ वहाँ आ गया। ताराचन्द को दूसरे काम पर लगा हुआ देखकर बोला-तू यहाँ क्यों काम कर रहा है? उसने कहा-सर! मुझे यहां मैनेजर साहब ने लगाया है। वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि मालिक ने एक घूँसा उसे दे मारा। ताराचन्द मालिक से मारने का कारण पूछने लगा तो मालिक गुस्से में आ गया। मालिक ने घूंसों की बौछार कर दी और कहने लगा-मुझसे जबान लड़ाता है, चल फैक्ट्री से बाहर हो जा। जब ताराचन्द थाने में रिपोर्ट लिखाने पहुँचा तो मालिक ने अपने एक चेले को भेजकर उलटे ताराचन्द के खिलाफ रिपोर्ट लिखा दी। मालिक ने पुलिस की जेब गरम कर ताराचन्द को कानूनी कार्रवाई से तो रोक दिया लेकिन फैक्ट्री मजदूरों की जुझारू एकता के कारण उसे काम पर वापस लेना पड़ा। इसके कुछ दिन बाद ही काम करने के दौरान ताराचन्द के पैर की एक उंगली कट गई। डॉक्टर की रिपोर्ट और ई. एस.आई. हस्पताल से बाकायदा कागज बनवाकर उसने पन्द्रह दिन की छुट्टी की अर्जी दे दी। पन्द्रह दिन बाद जब ताराचन्द काम पर वापस लौटा तो उसे फैक्ट्री गेट पर ही रोक दिया गया और गेट के बाहर खड़े-खड़े ही उसका हिसाब कर दिया गया। यह था मेहनती मजदूर साथी ताराचन्द का असली इनाम।

'हैप्पी बर्थ डे टु यू'

एक और कम्पनी का किस्सा आपको बताता हूँ। इसमें मैं जब काम करने पहुँचा तो गेट पर यूनियन का झंडा देखकर मैं बहुत खुश हुआ था। मैंने सोचा कि यहाँ तो यूनियन है, पैसा भी ठीक मिलता होगा और मैनेजर-सुपरवाइजरों की गुण्डागर्दी भी नहीं होगी। लेकिन मुझे बाद में काम करते हुए ही पता चला कि यूनियन का झण्डा तो मात्र एक निशान बनकर ही रह गया है। यहाँ के मजदूरों ने जुझारू लड़ाई लड़ी थी, लेकिन यूनियन नेतृत्व के एक कमजोर हिस्से की दगाबाजी के कारण आन्दोलन बिखर गया। जैसा कि आन्दोलन हारने के बार होता है, यहाँ भी मालिकों ने मजदूरों को फिर एकजुट होने से रोकने के लिए नए-नए नुसखे अपनाने शुरू कर दिए। मजदूरों को तरह-तरह से बाँटा जाने लगा, चमचागिरी को बढ़ावा मिलने लगा। यहाँ भी 'स्टार' चुना जाता है।

यहाँ पर फैक्ट्री मालिक एक और काम करता है। मजदूरों की सैलरी बढ़ाने, उनकी जायज माँगों को पूरा करने के बजाय इस नुस्खे से वह मजदूरों को भरमाता है। उसने मजदूरों के जन्मदिन की लिस्ट बनवा रखी है। किसी भी मजदूर का जन्म दिन आता है तो उस दिन नोटिस बोर्ड पर उसके नाम की मुबारकबाद लिख दी जाती है। इसके साथ ही, पचास रुपये का केक एक डिब्बे में दिया जाता है, जिस डिब्बे पर मालिक के हस्ताक्षर होते हैं। दो जून रोटी की भागमभाग में जो मजदूर अपना जन्मदिन भूल चुका हो, मनाने की बता तो दूर की है, जब उसे अन्य मजदूरों के बीच खड़ा कर 'हैप्पी बर्थ डे टु यू' कहा जाता है तो अपमान और गुस्से की पीड़ा उस मजदूर के चेहरे पर साफ देखी जा सकती है। लेकिन अकेला क्या करे, एकजुट होकर ही एक साथ कहा जा सकता है-खैरात नहीं, हमें हमारा हक चाहिए।

-अविनाश, नोएडा

मालिक लोग आते हैं, जाते है
कभी नीला कुर्ता पहनकर, कभी सफेद, कभी हरा
तो कभी लाल कुर्ता पहनकर।
महान हैं मालिक लोग
पहले पांच साल पर आते थे
पर अब तो और भी जल्दी-जल्दी आते हैं
हमारे द्वार पर याचक बनकर।
मालिक लोग चले जाते हैं
तुम वहीं के वहीं रह जाते हो
आश्वासनों की अफीम चाटते
किस्मत का रोना रोते;
धरम-करम के भरम में जीते।
आगे बढ़ो! मालिकों के रंग-बिरंगे कुर्ते को नोचकर
उन्हें नंगा करो।
तभी तुम उनकी असलियत जान सकोगे।
तभी तुम्हें इस मायाजाल से मुक्ति मिलेगी।
तभी तुम्हें दिखाई देगा अपनी मुक्ति का रास्ता।

भ्रष्ट सरकार, झूठी संसद, नपुंसक विरोध

इनसे निजात पाने की राह क्या है?

इलेक्शन या इंकलाब?

चुनावी राजनीति के मायाजाल से बाहर आओ!

क्रान्तिकारी राजनीति की अलख जगाओ!!

कारखानों में प्रशिक्षण का बढ़ता जोर

सेल्फ डेवलपमेण्ट ट्रेनिंग-अपना विकास या मुनाफाखोरों का?

उदारीकरण के इस दौर में जबकि निजीकरण-छंटनी-तालाबन्दी और श्रमिकों के कानूनी अधिकारों को छीनने का दौर तेज हो गया है, ट्रेडयूनियन के शीर्ष नेतृत्व ने मजदूर आन्दोलन को अर्थवाद के दलदल में फंसाकर संघर्ष की धार को कुन्द कर दिया है, तब कारखानेदारों द्वारा भी मजदूरों को भ्रमित करने के नये-नये हथियार प्रयोग किये जा रहे हैं। वे बड़े ही शातिराना तरीकों से नियमित मजदूरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलवा रहे हैं। बारी-बारी से मजदूरों की टोलियां बनाकर घुटे-घुटाए प्रशिक्षकों द्वारा मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित किया जा रहा है। श्रम मंत्रालय के सहयोग से चलने वाले ये प्रशिक्षण कार्यक्रम मूलतः संघर्ष की धार कुंद करने, सेवाभाव से प्रबन्धन की हर कारस्तानी को झेलने और हर हाल में उत्पादकता (यानी मुनाफा) बढ़ाने में कल-पुर्जे की तरह इस्तेमाल होने के लिये चलाये जा रहे हैं। लगभग सभी कारखानों की यही स्थिति है। इस सन्दर्भ में हमने 'बिगुल' के अक्टूबर, 2003 अंक में खटीमा (ऊधमसिंह नगर) के एक मजदूर साथी का लेख प्रकाशित किया था। इस विषय पर हमने आगामी अंकों में और सामग्री देने की भी घोषणा की थी। इस बीच हमें रुद्रपुर (ऊधमसिंह नगर) से भी एक मजदूर साथी का लेख प्राप्त हुआ है, जिसे हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। जो भी मजदूर साथी चाहें, अपना अनुभव या अपने विचार हमें लिखकर भेजें। -सम्पादक

क्या है सकारात्मक और क्या है नकारात्मक? एक ही चीज मजदूरों के लिए सकारात्मक होगी तो मालिकों के लिए नकारात्मक। प्रबन्धन की यही कोशिश होती है कि वह अपनी हर बात को सकारात्मक मनवाये। इसके लिए वह साम-दाम-दण्ड-भेद सारी नीतियाँ चलता है। अन्य हथकण्डों के साथ ही आजकल उन्होंने सेल्फ डेवलपमेण्ट ट्रेनिंग (स्वयं विकास प्रशिक्षण) कार्यक्रम चला रखा है। इसके बहाने मालिक वर्ग मजदूरों को ऐसी शिक्षा दे रहा है जो एक साधारण मजदूर को काम करने वाली ऐसी मशीन में बदल दे, जो सिर्फ काम, मालिक और अपने बारे में सोचे। वह मजदूर आन्दोलनों एवं एकजुटता से दूर रहे और इसके विरोध में खड़ा हो।

ऐसा ही 'सेल्फ डेवलपमेण्ट' का कार्यक्रम मेरे कारखाने में भी चल रहा है। यह प्रशिक्षण दो दिन का होता है, जिसमें प्रत्येक विभाग से दो-दो मजदूर चुनकर, कुल लगभग 20 मजदूर भेजे जाते हैं। ऐसे ही एक प्रशिक्षण कार्यक्रम की बानगी यहां प्रस्तुत है।

प्रशिक्षण देने के लिए दो पुरुष और एक महिला प्रशिक्षक बाहर से आये थे। शुरुआत एक लेक्चर द्वारा अपना परिचय देने और मजदूरों का परिचय जानने से होती है। फिर ट्रेनिंग कार्यक्रम का रुटीन बताने के बाद वह अपना लेक्चर शुरू करते हैं।

लेक्चरर-आदमी सबसे पहले किसके बारे में सोचता है?

एक मजदूर-अपने बारे में।

दूसरा मजदूर-जी अपने बारे में।

लेक्चरर-बिल्कुल सही। आदमी सबसे पहले अपने बारे में सोचता है, और फिर अपने परिवार के बारे में। मैं तुम्हें बताऊँगा कि हम कैसे ठीक रहें, कैसे स्वस्थ रहें। अगर हम स्वास्थ्य की बात करें तो 70 प्रतिशत बीमारियां हमारे पेट की होती हैं, पेट सही रहे इसके लिए रोज सुबह पानी में हर्रे भिगो दें और दूसरे दिन वही पानी छानकर पियें। पेट साफ रहेगा। इस प्रकार 70 प्रतिशत बीमारी का हल हो गया।

इसी प्रकार उन्होंने स्वस्थ रहने के लिए दो-चार नुस्खे और बताए, और दो-चार योगाभ्यास भी लम्बी भूमिका के साथ बताए। उन्होंने बताया कि यह 35 वर्ष तक खुद के रिसर्च का परिणाम है।

इसके बाद दूसरे लेक्चरर महोदय का सत्र शुरू हुआ। उनका विषय था 'पॉजिटिव एटिट्यूड' (सकारात्मक मानसिकता)।

दूसरा लेक्चरर-हमें घर-परिवार-कारखाने सभी जगह 'पॉजिटिव एटिट्यूड' के साथ व्यवहार करना चाहिए। घर में पत्नी व बच्चों के साथ प्यार से रहना चाहिए। कारखाने या आफिस जहाँ भी हम कार्य करते हैं। वहाँ सकारात्मक सोच होनी चाहिए। किसी भी काम को बोझ समझ कर नहीं बल्कि अपनी जिम्मेदारी समझकर करना चाहिए। प्रयास यह होना चाहिए कि मेरा कार्य अन्य साथियों से ज्यादा मात्रा में और बेहतर हो। अपने बॉस की बातों व डाँट पर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

इस दूसरे लेक्चरर महोदय ने बताया कि वह भी एक फर्म के मार्केटिंग विभाग में नौकरी करते थे। वे सुबह आठ बजे आफिस जाते थे और रात्रि 12 बजे वहां से छुट्टी मिलती थी। कभी-कभी आफिस पहुंचने पर बॉस का आदेश होता था कि 10 दिन के लिए मुम्बई जाओ। मुम्बई का कार्य खत्म होते ही नया आदेश आ जाता कि 5 दिन के लिए पूना जाओ। पूना का काम पूरा हुआ नहीं कि नया आदेश कि लौटते हुए तीन दिन के लिए दिल्ली भी जाना है। उन्होंने बताया कि इससे मैं बहुत परेशान था और मैंने अपने बॉस से कहा कि मेरा ट्रांसफर दूसरी जगह कर दीजिए, इस पर मेरे बॉस ने कहा कि तुम्हारा ट्रांसफर कैसे हो सकता है? तुम तो कारखाने की रीढ़ हो। यदि सेल नहीं होगी तो उत्पादन करने वाले उत्पादन कैसे करेंगे, एकाउण्ट वाले हिसाब काहे का रखेंगे? तुम्हारा ट्रांसफर नहीं हो सकता। इस पर लेक्चरर महोदय ने अपने बॉस से कहा-सर रीढ़ बहुत बड़ी है, इसमें से मेरा ट्रांसफर कर दो। यहां काम बहुत अधिक है। मैं यहां बहुत परेशान हूँ।

बॉस ने पूछा-क्या वास्तव में तुम्हें बहुत परेशानी है।

लेक्चरर-हां, वास्तव में मैं यहां बहुत परेशाान हूँ यहां काम बहित अधिक है। सुबह 8 बजे आफिस पहुंचता हूं और रात 12 बजे तक यहां से छुट्टी मिलती है। 10-10, 15-15 दिन घर से दूर रहना पड़ता है।

बॉस ने गम्भीर होते हुए कहा-वास्तव में तुम बहुत परेशान हो। तुम एक काम करो, रिजाइन कर दो।

लेक्चरर-सर, मैं रिजाइन नहीं कर सकता।

बॉस-क्यों?

लेक्चरर-सर, मुझे इतनी अच्छी सैलरी मिलती है, कम्पनी से कार व मोबाइल मिला है, इन्हें मैं कैसे छोड़ सकता हूं। मैं रिजाइन नहीं कर सकता।

बॉस-तुम्हें अच्छी सैलरी, मोबाइल व कार से तो प्यार है लेकिन जो कम्पनी तुम्हें यह सब कुछ दे रही है उसी के काम से नफरत है, इस पर जरा गम्भीरता से सोचो।

वास्तव में जब मैंने गम्भीरता से सोचा तो मेरा नजरिया ही बदल गया। मुझे लगा कि कम्पनी के प्रति मेरी भी जिम्मेदारी बनती है और मुझे पूरी लगन व कड़ी मेहनत से अपने कार्य को करना चाहिए।

लेक्चरर महोदय के इस भाषण पर एक मजदूर ने सवाल किया-सर, आप सेल्स विभाग के ऑफिसर थे। आपकी कोई यूनियन नहीं थी। 16 घंटे काम करना आपकी मजबूरी थी नहीं तो नौकरी जाने का डर भी था, लेकिन हमारे पास यूनियन है। मैनेजमेण्ट हमसे गैर कानूनी तरीके से जबरदस्ती 8 घंटे से ज्यादा काम नहीं करा सकता। उसका जोर वहीं चलता है, जहां यूनियन नहीं है। ऐसे में क्या हमें अपनी यूनियन को और ज्यादा मजबूत करना चाहिए या 16-16 घण्टे काम में पिसते रहना चाहिए।

लेक्चरर महोदय (थोड़ा नाराजगी से)-16 घंटे काम करने से कौन सी आपकी नाक कट जायेगी। आप एक मल्टीनेशनल कम्पनी में काम कर रहे हैं, सबसे ज्यादा वेतन और सुविधाएं भी पाते हैं। आप की कम्पनी की प्रतिस्पर्द्धा जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों की कम्पनियों से है। प्रतिस्पर्द्धा के आज के दौर में उन्नत टेक्नोलॉजी एवं उन्नत मशीनें तो सभी के पास हैं, लेकिन प्रतिस्पर्द्धा में टिकेगा वही जो अधिक से अधिक काम कम से कम कॉस्ट में करेगा। बाकी सभी बर्बाद हो जायेंगे और जब कम्पनी ही नहीं रही तो 8 घंटे का रोना रोते रहें। कम्पनी को प्रतिस्पर्द्धा में टिकना है तो आपको 24-24 घंटे काम करना पड़े तो आपको करना चाहिए। यूनियनबाजी का दौर अब गुजरे जमाने की बात हो गयी है। चीन और रूस जैसे मजदूर राष्ट्र भी अब अपनी सोच बदल रहे हैं, अगर हमें 'सर्वहित' करना है तो पहले अपनी सोच बदलनी होगी।

और भी कई उदाहरण इन प्रशिक्षकों ने दिए। तमाम तरीके की पुस्तकें हमें दी गयीं। कुल मिलाकर सार यही था कि हमको अपने और अपने परिवार तक ही सीमित रहना चाहिए। समाज के बारे में मत सोचो, जो मिल रहा है उसी में सन्तोष करो। कार्य के प्रति जिम्मेदारी का अहसास रखो, ज्यादा उत्पादन के लिए अपने साथियों से प्रतिस्पर्द्धा करो, और अपने बॉस के हर आदेश का पालन करो। उन्होंने यह भी कहा कि वे यूनियन के विरोधी नहीं हैं लेकिन आज के इस प्रतियोगी दौर में यूनियन का काम प्रबन्धन से सामंजस्य बिठाना होना चाहिए।

प्रशिक्षक बड़ी ही कुशलता से और मनोवैज्ञानिक तरीके से हिप्नोटाइज करने का प्रयास करते हुए मजदूरों के दिमाग में यह बिठाने की कोशिश करते हैं कि कैसे वे कम्पनी के कलपुर्जो की तरह काम करते रहें। उन्होंने शेर और बकरी को एक ही घाट पर पानी पीने की बात स्थापित की।

- रामचन्द्र शर्मा
सिंह कालोनी, रुद्रपुर

युद्धोन्माद के बाद क्रिकेटोन्माद

आजकल चारों तरफ हो-हल्ला मचा हुआ है। कहीं क्रिकेट के 'महासंग्राम' का, तो कहीं चुनावी 'महाभारत' का। या यूँ समझिए कि अब क्रिकेट के मैदान को कारगिल में तब्दील कर दिया गया है। युद्धोन्माद के बाद क्रिकेटोन्माद पैदा हो गया है। सब 'फील गुड' की माया है।

आखिर क्रिकेट है भी तो बड़े काम की चीज। बाबरी मस्जिद ध्वंस ने भाजपा को दो सांसद के आंकड़े से केन्द्र में पहुँचा दिया, तो गुजरात के खून साम्प्रदायिक खेल ने मोदी की ताजपोशी की। लेकिन चौतरफा लाभकारी नहीं है यह धंधा, जैसा कि क्रिकेट फैक्टर से है। यह दूर की कौड़ी है, नया है और शाकाहारी भी। यह संकट में घिरी सरकार के लिए संकटमोचक है। भाजपा और उसके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए जिताऊ फैक्टर है, अन्धराष्ट्रवाद के लिए अच्छा मसाला है तो वक्त-जरूरत पर यह दंगा कराने की पूरी क्षमता रखता है। इसके आर्थिक फायदे भी जबरदस्त हैं। लोगों में क्रिकेट का बुखार चढ़ते ही मन्दी से जूझ रही कम्पनियों के दिन बहुर गये। टीवी की बिक्री में रिकार्ड तोड़ वृद्धि हो गयी। सेल्युलर फोन धड़ल्ले से बिकने लगे। मोबाइल फोन कनेक्शनों का धंधा चटक गया और ताजा स्कोर जानने की तलब ने मोबाइल कम्पनियों के मुनाफे बढ़ा दिये। इसने तमाम कम्पनियों और उनके मालों के प्रचार के लिए एक और शानदार मौका दे दिया और विज्ञापनों की मारा-मारी मच गयी। चौके-छक्के-आउट-ओवर से लेकर वर्दी-बल्ला-पैड सबकुछ प्रायोजित हो गया। सट्टा बाजार में उछाल आ गया और मीडिया ने तीन माह में तीन साल का मुनाफा पीट लिया। चौकों-छक्कों की बरसात में सरकार की छह वर्षों की कारस्तानियां बह जा रही हैं। पिछले चुनाव में एक करोड़ रोजगार देने के भाजपाई वायदे को भूल जाओ। भूल जाओ कि डीजल-पेट्रोल-गैस या चावल-दाल-आटा कितना महंगा हुआ। सरकारी कम्पनियों को बिकने दो, नौकरियों को घटने दो, छंटनी-तालाबन्दी होने दो, श्रम कानूनों को मालिकों के पक्ष में लचीला होने दो। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को फैलने दो देश में और लूटने दो जनता को। मत याद करो कि अमेरिका के सामने सरकार ने घुटने टेक दिये हैं। मत सोचो कि स्कूलों-कालेजों में इतनी फीसें बढ़ने से तुम्हारा बच्चा स्कूल-कॉलेज का मुँह कैसे देखेगा।

बस याद रखो कि सचिन-सहवाग-द्रविड़ और कैफ के बल्ले ने दुश्मन देश के बॉलरों को कैसे पीटा। कैसे जहीर-इरफान-नेहरा और कुम्बले के हथगोलों ने पाकिस्तानी धुरंधरों को ध्वस्त कर दिया। पेट पर पट्टी बांधकर बस यह सोचो कि पिछले सत्तावन साल में जो किसी ने नहीं किया उसे मुस्कान बिखेरते हुए 'स्वदेशी' प्रधानमंत्री ने कैसे कर दिया अपनी क्रिकेट वाहिनी की बदौलत। कैसे एक बार फिर उनसे दोस्ती कायम हो गयी जिन्हें कुछ ही महीने पहले दुश्मन बताकर सीमा पर फौजी जमावड़ा कर दिया गया था। अंग्रेजों की सौगात यह खेल क्रिकेट अब दोस्ती का सबब बना, नौ महीने पहले चुनाव करने के औचित्य को सही साबित करते हुए। 'ये दिल मांगे मोर', है न दिलचस्प बात!

- मनमोहन

असली चुनाव

इस या उस
पूँजीवादी चुनावी पार्टी
के बीच नहीं
बल्कि
इंकलाबी राजनीति
और पूँजीवादी राजनीति
के बीच है।

चुन लो

चुनावी मृगमरीचिका में जीना है
या
इंकलाब की तैयारी की
कठिन राह पर चलना है?

खोड़ा कालोनी : नागरिक सुविधाओं की बाट जोहती एक बस्ती

चुनावी मदारियों के भरोसे कब तक?

बिगुल संवाददाता

नोएडा। लोकसभा चुनाव की घोषणा होने के साथ ही एक बार फिर चुनावी नेताओं को खोड़ा कालोनी और उसके निवासियों की समस्याएँ याद आने लगी हैं। एक से बढ़कर दावे किये जा रहे हैं और आश्वासन दिये जा रहे हैं। खोड़ा कालोनी के इतिहास और चुनावी नेताओं के चरित्र से अनजान किसी व्यक्ति को एकबारगी ऐसा लग सकता है कि चुनाव बीतते ही खोड़ा कालोनी के दिन बहुरेंगे। लेकिन पिछले डेढ़ दशक से जो आबादी खोड़ा के 'नरककुंड में वास' कर रही है उसे अब भरमाना मुमकिन नहीं। इसलिए अब खोड़ा निवासियों के अन्दर चुनाव को लेकर न कोई उत्साह है और न ही चुनावी आश्वासनों से कोई उम्मीद।

बिजली की आँख-मिचौनी न सड़क न पानी

राजधानी दिल्ली और उद्योग नगरी नोएडा की सरहद पर बसी खोड़ा कालोनी के निवासियों के लिये नागरिक सुविधाएँ सपना बनकर रह गयी हैं। आलम यह है कि बिजली 24 घंटे में महज कुछ ही घण्टे आती है। कभी-कभी तो पूरे-पूरे दिन बिजली गोल रहती है। गर्मी के दिनों में भी अंधेरे और भीषण गर्मी में रात काटने की यहां के लोगों को आदत पड़ गयी है।

खोड़ा में शायद ही कोई सड़क सही-सलामत हो। बरसात में तो खोड़ा जाना नरक की यात्रा करने के समान है। जलभराव और गन्दगी से बरसात के मौसम में तरह-तरह की बीमारियाँ भारी पैमाने पर फैलती हैं। पिछले बरसात में ही यहाँ डेंगू से आठ मौतें हो चुकी हैं।

इतनी बड़ी आबादी के लिये आज तक पीने के साफ पानी की व्यवस्था नहीं है। पानी का एकमात्र स्रोत हैण्डपम्प है। ज्यादातर हैण्डपम्प डीप बोर नहीं हैं। नतीजतन अशुद्ध और संक्रमित पानी पीने के लिये लोग बाध्य हैं। कहीं-कहीं तो पानी इतना गन्दा होता है कि अगर बाल्टी में एक घण्टे के लिये रख दिया जाये तो समूची बाल्टी में पीले रंग की एक परत चढ़ जाती है। कहीं पानी इतना खारा है कि आप एक घूँट भी नहीं पी सकते और इस पानी में दाल गलाने में दुगुना समय और ईंधन खर्च होता है। वैसे खोड़ा का जो हिस्सा सेक्टर-62 नोयडा की तरफ सटता है वहाँ पानी की दो टंकियाँ हैं लेकिन इसका पानी खोड़ा वालों को नसीब नहीं होता।

छह लाख आबादी के बीच इकलौता अस्पताल और सिर्फ दो प्राइमरी स्कूल

लाखों की आबादी के लिए इकलौता आयुर्वेदिक अस्पताल है, जो खुद दम तोड़ रहा है। अस्पताल की अपनी कोई बिल्डिंग नहीं है। फिलहाल यह एक सरकारी प्राइमरी स्कूल के एक हिस्से में किराये पर चल रहा है-एक हजार रुपये महीने किराये पर। यह अस्पताल भी काफी भागदौड़ के बाद कालोनीवासियों को नसीब हुआ था। पहले यह एक व्यक्ति के घर के एक हिस्से में किराये पर शुरू हुआ। लेकिन दो-तीन महीने तक किराया न मिलने के कारण यह वहाँ से उठ गया। उसके बाद अब अस्पताल को प्राइमरी स्कूल में जगह मिली है। इस स्वास्थ्य केन्द्र में केवल एक डाक्टर सहित कुल चार लोगों का स्टाफ है। डाक्टर के अलावा एक फार्मासिस्ट, एक वार्ड ब्वाय और एक चौकीदार। वैसे दिखाने को इस स्वास्थ्य केन्द्र में चार बेड भी लगे हुए हैं लेकिन इनका उपयोग शायद ही कभी हुआ होगा। जिला अस्पतालों की दुर्दशा से वाकिफ कोई भी व्यक्ति इस सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र की दुर्दशा का अनुमान लगा सकता है। न तो उचित मात्रा में दवाएँ नियमित मिल पाती हैं औ न ही रखरखाव के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध हो पाती है। फिर भी भूले-भटके 10-12 मरीज दिनभर में आ ही जाते हैं। स्कूल परिसर में होने के कारण बच्चों के शोरगुल और धमाचौकड़ी के बीच बेचारा स्वास्थ्यकेन्द्र अपनी हाल पर आँसू बहाता रहता है।

खोड़ा में रहने वाली अधिकांश आबादी चूँकि गरीब मजदूर आबादी है इसलिए नोएडा के सेक्टरों में बने सुविधा सम्पन्न प्राइवेट अस्पतालों और क्लीनिकों में अपना इलाज कराने के बारे में वे सोच भी नहीं सकते। नतीजतन पूरी खोड़ा कालोनी में तरह-तरह के नीम-हकीमों से अपना इलाज कराने के लिये मजबूर हैं।

खोड़ा कालोनी में लाखों की आबादी के बीच केवल दो प्राइमरी स्कूल हैं। एक संगम पार्क में दूसरा प्रगति विहार में। नतीजतन इस समय लगभग 250-300 निजी स्कूल चल रहे हैं। इसमें से ज्यादातर स्कूल छोटी-छोटी कोठरियों में चल रहे हैं। ये स्कूल कम शिक्षा की दुकानें ज्यादा लगती हैं जिनमें बेहद कम तनख्वाह पर बेरोजगार युवक-युवतियाँ मजबूरी में पढ़ा रहे हैं। समझा जा सकता है कि जिनका भविष्य खुद अन्धेरे में भटक रहा है वे नयी पीढ़ी का भविष्य किस तरह सँवार रहे होंगे।

खोड़ा के बसने का इतिहास-भूगोल

खोड़ा कालोनी की बसाहट आज से लगभग बीस साल पहले, 1984-85 में ग्राम पंचायत की जमीन की अवैध बिक्री की जरिये शुरू हुई। दरअसल, जैसे-जैसे उद्योगनगरी नोएडा बसनी शुरू हुई और काम की तलाश में पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और बिहार से भारी संख्या में मजदूरों का आना शुरू हुआ तो क्षेत्र के भूमाफियाओं ने धड़ाधड़ खोड़ा मकनपुर गाँव की खाली पड़ी हुई ऊसर जमीन पर कब्जा करना शुरू किया। इन्हीं जमीनों को बेचकर वे मालामाल हो गये। जमीन की खरीद-फरोख्त में भूमाफियाओं ने जमकर धाँधली की। एक-एक प्लॉट कई-कई बार बेचा गया। प्लॉट के पहले वाले खरीददार जब कब्जा लेने पहुँचते तो उन्हें मारपीट कर खदेड़ भी दिया जाता। यह सिलसिला आज भी थमा नहीं है। शुरू-शुरू में ये जमीनें सिर्फ 60 रुपये वर्ग गज की कीमत पर बिकी थीं। लेकिन धीरे-धीरे इनकी कीमत चढ़ती गयी। आज इनकी कीमत 15000-16000 रुपये वर्ग गज तक पहुंच चुकी है।

धीरे-धीरे यह कालोनी बसती गयी और आज आबादी छह लाख का आँकड़ा पार कर चुकी है लेकिन वोटर सिर्फ 92000 ही हैं। 16000 राशन कार्ड और लगभग 10-12 हजार टेलीफोन कनेक्शन हैं। इसके बावजूद खोड़ा आज भी नगरपालिका नहीं बन सका है। ग्राम सभा ही बना हुआ है।

लगभग चार वर्ग किमी क्षेत्रफल में बस चुकी इस कालोनी के उत्तर दिशा में वैशाली-वसुन्धरा आवासीय योजना (गाजियाबाद जिला) एवं बाई पास है। दक्षिण में नोएडा का सेक्टर 55, 56, 57 व 58 का कुछ हिस्सा, पूरब में सेक्टर 60, 61, 62 और पश्चिम में गाजीपुर और मयूर विहार फेज-तीन हैं जो दिल्ली का हिस्सा है। पिछले दिल्ली नगर निगम चुनाव में खोड़ा मकनपुर गांव के दिल्ली से सटे मकनपुर हिस्से के लोगों को वोट डालने का अधिकार मिला था जिससे उम्मीद बनी थी कि शायद ये हिस्सा दिल्ली नगर निगम में शामिल हो जाये लेकिन मामला अभी तक लटका हुआ है।

दरअसल, खोड़ा कालोनी की बदकिस्मती में बार-बार जिलों का सीमांकन बदलने का हश्र भी रहा है। जब गौतमबुद्धनगर जिला बना तो खोड़ा उसमें शामिल होने से रह गया। बिजली सप्लाई, टेलीफोन व्यवस्था और पोस्ट ऑफिस नोएडा ही बना रहा। पहले थाना भी नोएडा सेक्टर-58 ही था लेकिन बाद में इन्दिरापुरम (गाजियाबाद) के अन्तर्गत चला गया। खोड़ा कालोनी का जो हिस्सा मयूर विहार फेज-तीन से सटता है, उस हिस्से के रहने वाले लोग दिल्ली पुलिस और उ.प्र. पुलिस दोनों की अवैध धनउगाही से भी आजिज हैं। अवैध धनउगाही की बन्दरबाँट के लिए कई बार दिल्ली और उत्तर प्रदेश पुलिस के बीच झड़पें भी हो चुकी हैं। वैसे अन्य हिस्सों में भी उ.प्र. पुलिस की धनउगाही से लोग तंग आ चुके हैं।

खोड़ा कालोनी में रहने वाली 80 प्रतिशत आबादी बिहारी और उत्तराखण्डी है और 20 प्रतिशत में स्थानीय आबादी और अन्य आबादी सिमट जायेगी। बिहारी और उत्तराखण्डी लगभग बराबर-बराबर हैं। स्थानीय आबादी में मुख्यतः यादव और चमार हैं। यादव आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से दबंग हैं। गंवई राजनीति और संसद-विधानसभाओं की चुनावी राजनीति में भी इनका दबदबा रहता है।

खोड़ा की कुछ आबादी में लगभग 60 प्रतिशत किरायेदार होंगे। ये ज्यादातर दिल्ली, नोएडा, फरीदाबाद, गाजियाबाद की फैट्रियों में काम करने वाले मजदूर या रेहड़ी-खोमचा लगाकर गुजर-बसर करने वाले गरीब हैं। जो मकान मालिक भी हैं वे भी अधिकांशतः बिहार और उत्तराखण्ड से काम की तलाश में आये मजदूर एवं निम्न मध्यवर्ग के लोग हैं जिन्होंने सस्ती दरों पर जमीनें खरीदकर किसी तरह जोड़ गाँठकर मकान खड़ा कर लिया है। इनमें से अधिकांश की जीवनस्थिति निम्न मध्यवर्ग से ऊपर की नहीं है। हम कह सकते हैं कि खोड़ा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का एक बहुत बड़ा लेबर सप्लाई केन्द्र है।

संकीर्ण गोलबन्दियाँ

चुनावी राजनीति के जहर ने पूरे देश की तरह खोड़ा के सामाजिक वातावरण को जहरीला बनाकर रख दिया है। जाति-क्षेत्र और सम्प्रदाय के आधार पर खोड़ा की मेहनतकश आबादी आपस में बँटी हुई है। बिहारी लोगों और उत्तराखण्डी लोगों की अपनी-अपनी संस्थाएँ हैं जो अपने-अपने क्षेत्र के लोगों के विकास के नाम पर लोगों को एकजुट करने की कोशिशों में जुटी रहती हैं। चुनावी राजनीति के खिलाड़ी इन संस्थाओं को अपने चुनावी स्वार्थों की खातिर मोहरे के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा साम्प्रदायिक ताकतें भी विभिन्न सामाजिक-धार्मिक आयोजनों की आड़ में अपनी पैठ बनाने की कोशिशों में लगातार जुटी रहती हैं। कुल मिलाकर खोड़ा के मेहनतकशों की वर्गीय गोलबन्दी के बजाय फिलहाल संकीर्ण गोलबन्दियाँ ही हावी हैं।

क्रान्तिकारी एकजुटता और बुनियादी मुद्दों पर गोलबन्दी की जरूरत

चुनाव-दर-चुनाव बीतते गये लेकिन खोड़ा की समस्याएँ जस की तस बनी हुई हैं। इस चुनाव में फिर आश्वसनों के गुब्बारे फुलाये जा रहे हैं। हर आदमी जानता है कि चुनावी बरसाती मेंढक चुनाव बीतते ही अपने-अपने बिलों में दुबक जायेंगे। तब फिर रास्ता क्या है?

खोड़ा निवासियों को अगर अपनी समस्याओं से निजात पाने की राह पर बढ़ना है तो उन्हें सबसे पहले चुनावी मदारियों के भरोसे बैठे रहने की आदत से पिण्ड छुड़ाना होगा और अपनी व्यापक एकजुटता के रास्ते पर बढ़ना होगा। खोड़ा में नागरिक सुविधाओं को हासिल करने के लिए क्षेत्र, जाति और धर्म-सम्प्रदाय की संकीर्ण गोलबन्दियों और चुनावी राजनीति द्वारा पैदा किये गये सभी बंटवारों से ऊपर उठकर एक व्यापक जन गोलबन्दी करनी होगी और संघर्षों में उतरने की तैयारी करनी होगी।

इस दिशा में सबसे पहले जागरूक और बहादुर नौजवानों एवं अन्य जागरूक नागरिकों को पहलकदमी लेनी होगी। बिजली, सड़क, पानी, सीवर-व्यवस्था, स्कूल-अस्पताल जैसी नागरिक सुविधाओं के लिए संघर्ष के साथ ही रोजगार एवं मेहनतकशों के अन्य बुनियादी मुद्दों पर एक लम्बी लड़ाई के बारे में भी सोचना होगा।

नेता घर-घर घूम रहे हैं

हाथ जोड़कर दाँत निपोरे
नेता घर-घर घूम रहे हैं

जिनके चेहरों से नफरत है
चरण उन्हीं के चूम रहे हैं

आगे चमचे पीछे चमचे
देखो कैसे झूम रहे हैं

कौन देश है कहाँ देश है
राम नाम बस लूट रहे हैं

नेता घर-घर घूम रहे हैं

सवाल है
कि इस लोकतंत्र का हम क्या करें
जिसमें हम नहीं चुन सकते हैं
अपनी पसन्द का प्रतिनिधि

कोई है जो दंगा भड़काता है
कोई है जो सबकुछ बेचकर खा जाता है
कोई नहीं है है आम आदमी के साथ
सबके हैं अपने-अपने दावे
अपनी चोटें, घात-प्रतिघात

सवाल है
कि ऐसे में इस लोकतंत्र का
हम क्या करें

- रामकृष्ण पाण्डेय

एक चुनावी भाषण का असली मतलब

"मित्रो! इस बार चुनाव के समय मैं आपकी सेवा में हाजिर हुआ हूँ।" (नालायको! कौन चाहता है तुम्हारे दरवाजे तक आना, लेकिन क्या करें आना पड़ता है।)

पिछले पाँच सालों में हमारी सरकार ने उतना विकास किया, जितना पिछली सरकारें पचास वर्षों में नहीं कर पाई थीं। (पिछले पाँच सालों में हमने उतनी तबाही-बर्बादी मचाई है, जितनी पिछले पचास बरस में भी नहीं हुई थी।)

देश ने परमाणु बम बना लिया है, टेलीफोन और गैस कनेक्शन बँटवाये हैं। (रोजगार नहीं दिया तो क्या हुआ, रोटी नहीं मिल रही तो हम क्या करें, बम पर गर्व करो! सीना फुलाओ! संतोषं परमं सुखम।)

समाज में साम्प्रदायिक सद्‌भाव कायम हुआ और इसे हर कीमत पर बनाये रखा जायेगा। (एक राउंड का जनसंहार हम गुजरात में कराकर वोट बटोर चुके हैं, आगे की तैयारियां चल रही हैं।)

खेत में किसान और कारखाने में मजदूर 'फील गुड' कर रहा है। (लाखों किसान अपनी जगह-जमीन से उजड़ रहे हैं और कारखाने बन्द होने के कारण मजदूरों को सड़क पर ला पटका है।)

देश के औद्योगिक विकास की दिशा में हम लगातार प्रयत्नशील हैं। (हमारी पिछले पाँच सालों में लगातार कोशिश रही है कि मजदूरों के खून-पसीने से खड़े किये गये सरकारी उद्योगों को हम मुनाफोखोरों को औने-पौने दामों पर बेच दें।)

देशकी सेवा करना ही हमारा धर्म रहा है। (हमारा न तो कोई देश है और न कोई धर्म, जनता को बेवकूफ बनाना ही हमारा काम है।)

आपकी सेवा करते हुए यह जीवन सार्थक हुआ है। (पूँजीपतियों की सेवा की, उनकी स्वामिभक्ति के चलते पद भी मिला, अथाह पैसा भी।)

हमारी चाहत है कि पूरे देश में सड़कों का जाल बिछा दिया जाये। (हमारे आका यानि देशी-विदेशी पूँजीपति चाहते हैं कि सड़कों को दुरुस्त किया जाय, ताकि उनके मालों की आवाजाही आसान हो।)

देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिये 'पोटा' जैसा कानून बनाया गया। (पोटा का मकसद साफ है, जो भी हमारी काली करतूतों के खिलाफ आवाज उठायेगा, उसे पुलिसिया बूटों से कुचला जायेगा।)

आतंकवाद के खिलाफ जंग जारी है। (आतंकवाद तो बहाना है। आतंकवाद का हौव्वा खड़ाकर उसकी आड़ में जनान्दोलनों और सत्ता विरोधी संघर्षों का दमन आसान हो जाता है। वरना कौन नहीं जानता कि आतंकवादियों को हमारे द्वारा ही पाला-पोसा जाता है और स्वयं हम किसी से कम हैं क्या?)

हमारा आपसे निवेदन है कि अपने मताधिकार का प्रयोग करके लोकतंत्र को मजबूत करें। (इस चुनावी नौटंकी में भाग लेकर धनतंत्र को लम्बी उम्र प्रदान करें।)

- रामसेवक

नौजवानों के लिए शहीदेआजम भगतसिंह की पांच जरूरी पुस्तिकाएं

क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा • मैं नास्तिक क्यों हूं और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका

जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो सही लड़ाई से नाता जोड़ो

बम का दर्शन और अदालत में बयान • भगतसिंह ने कहा...चुने हुए उद्धरण

प्रत्येक पुस्तिका का मूल्य : पांच रुपये

प्राप्त करें : **जनचेतना** के सभी केन्द्रों से (पता पेज 2 पर)

रुको, ठहरो! भगतसिंह की बात सुनो!

रुद्रपुर। शहीदेआज़म भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु के 73वें शहादत दिवस पर 'नौजवान भारत सभा' व 'बिगुल मजदूर दस्ता' ने एक साइकिल जुलूस निकाला। इस अभियान को 'नयी प्रेरणा, नयी शुरुआत' नाम से शुरू किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय भगतसिंह चौक से हुयी, जहां भगतसिंह की प्रतिमा पर नन्हे-मुन्ने बच्चों ने माल्यार्पण किया। 'बिगुल मजदूर दस्ता' व 'नौजवान भारत सभा' के कार्यकर्ताओं ने शहीदों की स्मृति में क्रान्तिकारी गीत गाये। साइकिल जुलूस में कार्यकर्ताओं ने 'भगतसिंह को याद करेंगे, जुल्म नहीं बर्दाश्त करेंगे', 'भगतसिंह का सपना आज भी अधूरा, मेहनतकश और नौजवान उसे करेंगे पूरा', 'भगतसिंह का आह्वान, जागो-जागो नौजवान', 'नौजवान जब भी जागा इतिहास ने करवट बदली है' आदि नारे लिखे टोप पहन रखे थे और साइकिलों पर तख्तियां लगा रखी थीं। अभियान के दौरान, मुख्य बाजार व रमपुरा, खेड़ा आदि मुहल्लों में जगह-जगह नुक्कड़ सभा करते हुए लोगों का आह्वान किया गया।

नुक्कड़ सभा में वक्ताओं ने कहा कि जिस आजादी का सपना भगतसिंह ने देखा था वह आज भी अधूरा है। गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई के चलते रोज पूरे परिवार सहित आत्महत्याओं की खबरें बढ़ती जा रही हैं। अपने बुनियादी हकों से महरूम मुल्क की 70 प्रतिशत आबादी आखिर किस आजादी का जश्न मनाए। जहां लोग भूख से मर रहे हैं और करोड़ों टन अनाज गोदामों में सड़ रहा है। उदारीकरण-निजीकरण की नीतियों के सहारे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने देश को अपनी गिरफ्त में ले रखा है। देशी-विदेशी मुनाफाखोर आज एकजुट होकर मेहनतकश तबके का खून चूसने के लिए नई-नई नीतियां ला रहे हैं। छंटनी-तालाबंदी का कहर बरपा कर रही सरकारें व्यवस्था विरोध की हर आवाज को दबा देने में अंग्रेज जालिम हुक्मरानों से पीछे नहीं है। ऐसे में भगतसिंह की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

इस अवसर पर "रुको! ठहरो! भगतसिंह की बात सुनो, हालात को बदलने के लिए संगठित हो!" नाम से पर्चा भी निकाला गया। पर्चे में कहा गया है, "साथियों! आज हम सीलन भरी बन्द अंधेरी गली के अन्तिम छोर पर खड़े हैं, जहां जिन्दगी के मुद्दों से दूर धकेल कर जातीय व साम्प्रदायिक शक्तियाँ भयानक खून-खराबा मचाए हुए हैं, दंगे-फसाद करवा रही हैं। ऐसे में क्या हमें अब भी मूक दर्शकबने रहना चाहिए या फिर शहीदेआजम के सपनों को साकार करने के लिए जोरो-जुल्म से मुक्त एक समतामूलक समाज की स्थापना के लिए आगे आना चाहिए।" इस अवसर पर भगतसिंह के विचारों पर आधारित पोस्टर व पुस्तक प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। जुलुस का समापन भगतसिंह चौक पर किया गया।

प्रस्तुति : आशीष

परदहा मिल में मजदूरों का शोषण-उत्पीड़न

प्रबन्धतन्त्र के जालिमाना रवैये से मजदूरों में आक्रोश

बिगुल संवाददाता

परदहा, मऊ। उत्तर प्रदेश राजकीय कताई मिल (परदहा मिल) का प्रबन्धतंत्र मजदूरों के शोषण-उत्पीड़न की सारी हदें पार करने पर आमादा हो चुका है। प्रबन्धतंत्र के जालिमाना रवैये से मजदूर अन्दर ही अन्दर गुस्से से उबल रहे हैं। उनकी बर्दाश्त की हदें भी पार होती जा रही हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की इस सरकारी कताई मिल में लगभग 5000 महिला एवं पुरुष मजदूर काम करते हैं। इस मिल में मजदूरों द्वारा अपना हक मांगना गुनाह है। न समय पर वेतन मिलता है और न हारे-गाढ़े में छुट्टी। ओवरटाइम भी नहीं मिलता और तरह-तरह की घपलेबाजियाँ कर प्रबन्धक मजदूरों की कमाई लगातार हड़पते रहते हैं। प्रबन्धतंत्र इतना मगरूर है कि उसे न तो शासन का डर है न प्रशासन का।

इस मिल में जो मजदूर अपने वेतन और हक की माँग करता है उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। तरह-तरह के गलत आरोपों में फंसा दिया जाता है। हाल ही में शिवमूरत गुप्ता नामक एक रिंग फिटर ने जब हक की माँग की तो उसे नौकरी से निकाल दिया गया। हालाँकि 23 फरवरी को प्रदेश के श्रम मंत्री कौशल किशोर के मिल आने की भनक प्रबन्ध तंत्र को मिली तो उसे फिर से बहाल कर दिया गया।

मासिक वेतन समय पर माँगने पर मिल के श्रम अधिकारी के. के. शुक्ला मजदूरों को हड़काते हुए जवाब देते हैं कि तुम लोग संगठन बनाते हो, जाओ नेताओं एवं श्रम मंत्री से ले लेना। भर्ती के समय समाचार पत्रों के जरिये सूचना दी जाती है कि 4000 रुपये मासिक वेतन पर रखा जायेगा लेकिन दिया जाता है सिर्फ 700 से 900 रुपये तक।

प्रबन्धतंत्र के जुल्म का आलम यह है कि वह मजदूरों से बीमारी में भी काम कराता है, उचित इलाज की व्यवस्था की तो बात ही छोड़िये। मजदूर दिवस (1 मई), 15 अगस्त व 26 जनवरी जैसे राष्ट्रीय अवकाश के दिन और यहाँ तक कि चुनाव के दिन भी काम कराया जाता है। शादी-ब्याह या किसी दुख के दिन भी छुट्टी नहीं मिलती। मजदूर जब इस बारे में पूछते हैं तो प्रबन्धतंत्र टका सा जवाब दे देता है कि इस सम्बन्ध में कोई जी.ओ. (शासनादेश) नहीं है। ओवरटाइम के स्थान पर एक ट्रेड गुड वर्क बनाकर सामान्य ड्यूटी का ही पैसा दिया जाता है। कैजुअल अवकाश, सवेतन अवकाश व गजटेड अवकाश को सवेतन अवकाश में नहीं जोड़ा जाता। पिछले वर्ष तक इसे जोड़ा जाता था।

प्रबन्धतंत्र प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से प्राप्त मेडिकल प्रमाण पत्र को नहीं मानता। फिटनेस प्रमाणपत्र के साथ बीमारी के बाद दुबारा काम पर वापस आने पर तरह-तरह से परेशान किया जाता है। दुबारा छुट्टी नहीं करने के लिए माफीनामा लिखवाया जाता है।

एक मजदूर रवीश पाठक के साथ तो हद ही हो गयी थी। वह रिंग फ्रेम में स्थायी मजदूर के रूप में काम करते थे। रवीश जब अपना फिटनेस प्रमाण पत्र लेकर शिफ्ट ए में डाफर के पद पर काम पर वापस आये तो प्रबन्धतंत्र महीनों उन्हें इधर-उधर घुमाता रहा। आखिरकार थक-हारकर जब रवीश पाठक ने प्रबन्धन के नाम एक रजिस्ट्री की तो उसे स्वीकार नहीं किया गया। पत्र वापस पाठक को ही मिल गया। उल्टे प्रबन्धन ने एक फर्जी पत्र के माध्यम से मनगढ़न्त कहानी बनाकर एक झूठा अभियोगपत्र और त्यागपत्र की कॉपी उनके पास भेज दी। जबकि हकीकत यह थी कि रवीश पाठक को न तो कोई अभियोग पत्र मिला था और न ही उन्होंने कोई त्यागपत्र दिया था। इस बारे में भी पाठक ने प्रबन्धतंत्र को फिर से एक पत्र (सं ईई 70546585 आई एन दिनांक 20-9-02) भेजा। यह रजिस्ट्री भी वापस रवीश को मिल गयी। अब तक कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

मिल की मशीनें जर्जर अवस्था में हैं जबकि मानक के अनुसार (महीनों से उत्पादन का मानक दस गुना बढ़ा दिया गया है) उत्पादन न करने पर मजदूरों को भगा दिया जाता है।

बाइंडिंग सेक्शन में 7 एस का प्रोडक्शन 98 किग्रा है जबकि इसके स्थान पर 139 किग्रा पर रेट लगाकर पैसा दिया जाता है। इससे प्रतिदिन 20 रुपये की कटौती एक मजदूर के वेतन से होती है। हर साल 10 रुपये जो इंक्रीमेंट बढ़ता है उसे भी मजदूरों को नहीं दिया जाता।

आर-पार की लड़ाई की तैयारी

पिछली 23 फरवरी को श्रम मंत्री कौशल किशोर इस कदर चोरी-चुपे से मऊ आकर मजदूरों से मिलकर गये कि मऊ जिले के प्रशासन तक को भनक नहीं लगी। मजदूरों से हमदर्दी जताने के लिए मंत्री महोदय केवल मिल के मजदूरों से मिलकर वापस लौट गये जबकि प्रबन्धतंत्र ने भी उनके स्वागत की तैयारी कर रखी थी। मंत्री महोदय ने जाते-जाते मजदूरों को आश्वासन भी दिया था कि उनकी समस्याएं दूर होंगी लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। पता चला है कि लखनऊ पहुँचकर उन्होंने मिल के किसी अधिकारी को बुलाकर कुछ बातचीत की लेकिन क्या तय हुआ इस बारे में मजदूरों को कुछ पता नहीं। मजदूरों की सारी मांगें जस की तस पड़ी हुई हैं।

मंत्री महोदय के इस रवैये से अब मजदूरों के धीरज का बाँध टूटता जा रहा है और वे आर-पार की लड़ाई के लिए संगठित हो रहे हैं। हालाँकि अभी मिल के मजदूरों का कोई क्रान्तिकारी नेतृत्व उभरकर सामने नहीं आया है लेकिन मजदूरों ने संगठित होने की दिशा में कदम बढ़ा दिये हैं। मजदूरों के भीतर मौजूद इस आक्रोश को भाँपकर 'एटक', 'एक्टू' के नेता परिक्रमा करने लगे हैं लेकिन मजदूरों ने उन्हें भी साफ-साफ कह दिया है कि अब तक जितने यूनियन वाले नेता आये वे सब अपना उल्लू सीधा कर चले गये।

अब देखना यह है कि क्या मजदूरों के बीच से कोई क्रान्तिकारी नेतृत्व आगे आता है या नहीं। कहने की जरूरत नहीं कि मजदूरों को पिछली लड़ाइयों से सबक लेना होगा और सामूहिक नेतृत्व और जनवादी कार्यशैली पर आधारित अपना जुझारू संगठन तैयार कर सूझबूझ के साथ संघर्ष की तैयारी करनी होगी।

विशेष सामग्री

(सैंतीसवीं किस्त)

पार्टी की बुनियादी समझदारी

अध्याय -12

पार्टी सदस्यों के दाखिले की शर्तें और प्रक्रियाएँ

एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना मजदूर वर्ग क्रान्ति को कतई अंजाम नहीं दे सकता। लेनिन ने इस बात को बार-बार जोर देकर कहा था। स्तालिन और माओ ने भी बराबर इस बात पर जोर दिया और बीसवीं सदी की सभी सफल सर्वहारा क्रान्तियों ने भी इसे सच साबित किया।

लेनिन ने सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी के सांगठनिक उसूलों का निर्धारण किया और इसी फौलादी सांचे में बोल्शेविक पार्टी को ढाला। चीन की पार्टी भी बोल्शेविक पार्टी की ही उत्तराधिकारी थी। सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान, समाजवादी समाज में वर्ग-संघर्ष का संचालन करते हुए माओ के नेतृत्व में चीन की पार्टी ने अन्य युगान्तरकारी सैद्धान्तिक उपलब्धियों के साथ-साथ लेनिनवादी सांगठनिक सिद्धान्तों को भी और आगे विकसित किया।

सोवियत संघ और चीन में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना के लिए बुर्जुआ तत्वों ने सबसे पहले यही जरूरी समझा कि सर्वहारा वर्ग की पार्टी का चरित्रा बदल दिया जाये। हमारे देश में भी क्रान्ति का रास्ता छोड़ संसदीय रास्ते पर चलने वाली नामधारी कम्युनिस्ट पार्टियां मौजूद हैं। भारतीय मजदूर क्रान्ति को सफल बनाने के लिए भारत में भी सर्वहारा वर्ग की एक सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी खड़ी करने का काम सबसे ऊपर है।

इसके लिए बेहद जरूरी है कि मजदूर वर्ग यह जाने कि असली और नकली कम्युनिस्ट पार्टी में क्या फर्क होता है और एक क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी कैसे खड़ी की जानी चाहिए।

इसी उद्‌देश्य से, फरवरी 2001 के अंक से हमने एक बेहद जरूरी किताब 'पार्टी की बुनियादी समझदारी' के अध्यायों का किस्तों में प्रकाशन शुरू किया है। यह किताब सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान पार्टी-कतारों और युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए तैयार की गई श्रृंखला की एक कड़ी थी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की दसवीं कांग्रेस (1973) में पार्टी के गतिशील क्रान्तिकारी चरित्र को बनाये रखने के प्रश्न पर अहम सैद्धान्तिक चर्चा हुई थी, पार्टी का नया संविधान पारित किया गया था और संविधान पर एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। इसी नई रोशनी में यह पुस्तक एक सम्पादकमण्डल द्वारा तैयार की गई थी। मार्च, 1974 में पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, शंघाई से इस पुस्तक के प्रथम संस्करण की 4,75,000 प्रतियां छपीं। यह पुस्तक पहले चीनी भाषा से फ्रांसीसी भाषा में अनूदित हुई और 1976 में प्रकाशित हुई। फिर नार्मन बेथ्यून इंस्टीट्यूट, टोरण्टो (कनाडा) ने इसका फ्रांसीसी से अंग्रेजी में अनुवाद कराया और 1976 में ही इसे प्रकाशित कर दिया। प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद मूल पुस्तक के इसी अंग्रेजी संस्करण से किया गया है। -सम्पादक

वैचारिक तौर पर पार्टी का पूरी तरह अनुसरण करने के लिए अपने विश्व दृष्टिकोण को सचेतन तौर पर पुनर्गठित करो

कम्युनिस्टों के लिए अपने विश्व दृष्टिकोण को पुनर्गठित करने का सवाल वैचारिक तौर पर पूरी तरह पार्टी का अनुसरण करने का सवाल है।

अध्यक्ष माओ हमें सिखाते हैं : **"दुनिया को बदलने के सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जनता के संघर्ष में निम्न कार्यों को पूरा करना शामिल हैः वस्तुगत दुनिया को बदलना और उसी के साथ अपनी आत्मगत दुनिया को भी बदलना-अपनी संज्ञानात्मक क्षमता को बदलना और आत्मगत और वस्तुगत दुनिया के बीच के सम्बन्ध ों को बदलना।"** लगातार विकासमान हैं, जैसा कि समाज है। जैसे हमारे देश में में समाजवाद के निर्माण का कार्य तेजी से प्रगति करता है, यह शर्त कि कम्युनिस्ट अपनी आत्मगत दुनिया को बदले, और भी जरूरी हो जाती है। साथ ही, हमें इस बात का भी अहसास होना चाहिए कि वर्ग और वर्ग संघष समाजाद के युग में भी मौजूद हैं, बुर्जुआ वर्ग लगातार हरसंभव जरिया ढूंढते हुए, हर मौजूद माध्यम का इस्तेमाल करते हुए, अपना सड़ा और मरणशील विश्व-दृष्टिकोण फैलाने में इस उम्मीद के साथ लगा हुआ है कि वह हमारे पार्टी सदस्यों को भ्रष्ट कर देगा। अगर कम्युनिस्ट अपनी चौकसी को ढीला छोड़ दें और इसका विरोध न करें, तो वे सर्वहारा वर्ग के उन्नत तत्व नहीं बन सकते। इसलिए, कम्युनिस्टों को सचेतन तौर पर अध्ययन करना चाहिए, सम्पूर्णता से मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ त्से तुड. विचारधारा को समझना चाहिए, और उन्हें तीन महान क्रांतिकारी संघर्षों में भागीदारी करनी चाहिए और अपना विश्व दृष्टिकोण बदलने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

सचेतन तौर पर अपने विश्व दृष्टिकोण को पुनर्गठित करने और वैचारिक तोर पर पूरी तरह पार्टी का अनुसरण करने क ेलिए हमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्लासिकीय रचनाओं और अध्यक्ष माओ की रचनााओं को अध्यवसायपूर्ण अध्ययन करना चाहिए। वस्तुगत और आत्मगत दुनिया को बदलने का सबसे तेज वैचारिक हथियार मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ-त्से तुड. विचारधारा है। हम कम्युनिस्टों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ त्से तुड. विचारधारा के हथियार से अने आपको दृढ़ता के साथ लैस कर लेना चाहिए और वस्तुगत दुनिया को बदलते हुए अपनी आत्मगत दुनिया को बदलने के लिए संघर्ष करना चाहिए, ताकि हम क्रांतिको जारी रख सकें और लगातार प्रगति कर सकें। "जहाज तट पर आ गया और ट्रेन स्टेशन पर आ गई है" का अर्द्धक्रान्तिकारी विचार गलत है। कम्युनिस्ट के लिए यह सोचना भी गलत है कि उसे अपने आपको बदलने की कोई जरूरत नहीं, या यह कि उसने अपने आपको पहले ही काफी बदल लिया है। नेतृत्वकारी पदों पर तैनात कम्युनिस्टों को अपनी आत्मगत दुनिया बदलने पर विशेष तौर पर करीबी ध्यान देना चाहिए। तथयो ंने दिखला दिया है कि पार्टी लाइन और सिद्धान्तों को लागू करने की कामरेडों की क्षमता समाजवादी रास्ते पर दृढ़ता से चलते रहने की उनकी जिद और पार्टी के जुझारू कामों को निभाने में जिन इकाइयों का नेतृत्व कर रहे हैं उनकी सफलता, ये सब सीधे इस बात पर निर्भर करता है कि वो अपनी आत्मगत दुनिया को बदलने का काम कैसे करते हैं। इस तरह, इन कॉमरेडों को बेहद सचेतन तौर पर मार्क्सवाद-लेनिनवादी क्लासिकीय रचनाओं का अध्ययन करना चाहिए, जनसमुदायों की राय को विनम्रतापूर्वक सुनने में दक्ष होना चाहिए और उनका विश्व दृष्टिकोण बदलने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए ताकि वे सर्वहारा अधिनायकत्व के अंतर्गत क्रान्ति को जारी रखने में सक्षम आदर्श नेता बन सकें। सचेतन तौर पर अपना विश्व दृष्टिकोण बदलने और वैचारिक तौर पर पूरी तरह पार्टी का अनुसरण करने के लिए, हमें वर्ग संघर्ष के तीन महान क्रान्तिकारी आन्दोलनों, उत्पादन और वैज्ञानिक प्रयोग के लिए संघर्ष में कूद पड़ना चाहिए, और इन संघर्षों की प्रक्रिया में अपना विश्व दृष्टिकोण बदलने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। तथ्य दिखलाते हैं कि केवल वर्ग संसघर्षऔर दो लाइन के संघर्ष की अगली कतार में रहकर ही हम समाजवादी समाज में वर्ग संघर्ष की चारित्रिक विशेषताओं और नियमों को समझ और उनका उपयोग कर सकते हैं और नकली और असली मार्क्सवाद में भेद करने की अपनी क्ष्ज्ञमता को बढ़ा सकते हैं। अपने विश्व दृष्टिकोण को पुनर्गठित करने के सवाल पर, ल्यू शाओ ची ने "आत्म-परिष्कार" के कचरे की फेरी लगाई और अपने आपको एक छोटी-सी कोठरी में बंद करने" की वकालत की। लिन पियाओ ने दलील दी कि "अपने अन्तरतम आत्मा में क्रान्ति छेड़ना" जरूरी है। हय बकवास सामाजिक व्यवहार के महत्सव और सथ ही अपना विश्व दृष्टिकोण बदलनके लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ त्से तुड़ विचारधारा के अध्ययन के महत्व को नकारती है। यह शुद्धता, भाववादी प्रागन, भववाद है। हमें जोरदार ढंग से इन छलावों की आलोचना करनी चाहिए और तीन महान क्रान्तिकारी आन्दोलनों के जरिएअपने विश्व दृष्टिकोण को बदलना चाहिए ताकि हम सर्वहारा वर्ग के शानदार योद्धा बन सकें, बिल्कुल नाम के अनुरूप।

अध्यक्ष माओ हमें सिखाते हैं : **"समाज के विकास के मौजूदा दौर में, दुनिया को सही ढंग से जानने और बदलने की जिम्मेदारी इतिहास ने सर्वहारा वर्ग और उसकी पार्टी के कंधों पर रखी है।"** सारी जिन्दगी हम कम्युनिस्टों को और मेहनत केसाथ्ज्ञ हमारी आत्मगत दुनिया को बदलने, क्रान्ति करने, अध्ययन करने ओर खुद को बदलने के लिए संघर्ष करना चाहिए। हमेशा अध्यक्ष माओ की क्रान्तिकारी लाइन का अनुसरण करते हुए हमें कम्युनिज्म की प्राप्ति के गौरवशाली लक्ष्य को हासिल करने के लिए संघर्ष करने को प्रयासरत रहना चाहिए।

अगले अंक में जारी

नई किताबें

परिकल्पना प्रकाशन

1. दोन की कहानियाँ शोलोखोव 35.00
2. दुश्मन (नाटक) मक्सिम गोर्की 35.00
3. एक तयशुदा मौत (उपन्यास) मोहित राय 25.00
4. चम्पा और अन्य कहानियाँ मदन मोहन 35.00
5. षड्‌यंत्ररत मृतात्माओं के बीच कात्यायनी (साम्प्रदायिकता विरोधी लेख) 25.00
6. रात अँधेरे की बारिश में (कविताएं) कात्यायनी 15.00
7. इस रात्रि श्यामला बेला में (कविताएं) सत्यव्रत 30.00
8. इन्तिफादा : फलस्तीनी कविताएं 30.00

भगतसिंह की पाँच पुस्तिकाएँ

9. क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा 5.00
10. मैं नास्तिक क्यों हूं और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका 5.00
11. बम का दर्शन और अदालत में बयान 5.00
12. जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो 5.00
13. भगतसिंह ने कहा...(चुने हुए उद्धरण) 5.00
14. नौजवानों से दो बातें पीटर क्रोपोटकिन 5.00

राहुल फाउण्डेशन

1. गोथा कार्यक्रम की आलोचना मार्क्स 10.00
2. क्या करें? लेनिन 30.00
3. वामपंथी कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज लेनिन 15.00
4. गद्दार काउत्स्की लेनिन 15.00
5. जनता के बीच पार्टी का काम लेनिन 30.00
6. धर्म के बारे में लेनिन 20.00
7. समाजवाद वैज्ञानिक तथा काल्पनिक एंगेल्स 12.00
8. लेनिनवाद के मूलभूत सिद्धान्त स्तालिन 15.00
9. माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन (एक खण्ड में) 70.00
10. कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में माओ त्से-तुङ 40.00
11. सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना माओ त्से-तुङ 35.00
12. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति चुने हुए दस्तावेज और लेख (खण्ड 1) 35.00
13. इतिहास ने जब करवट बदली विलियम हिण्टन 20.00
14. डब्ल्यूएसएफ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हार्स 50.00

पूरी पुस्तकसूची व पुस्तकें मंगाने के लिए सम्पर्क करें :

जनचेतना

• डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020 • काफी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ (शाम 5 से 8.30) • 29, यूएनआई अपार्टमेंट, सेक्टर-11, वसुंधरा, गाजियाबाद • जनचेतना ठेला, चौड़ा मोड़, नोएडा (शाम 5 से 8.30) • जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001 • 989, पुराना कटरा, यूनिवर्सिटी रोड, मनमोहन पार्क, इलाहाबाद • भदईपुरा (प्राइमरी पाठशाला के पास), रुद्रपुर, ऊधमसिंहनगर

email : janchetna@rediffmail.com

लेनिन के जन्मदिवस (22 अप्रैल) के अवसर पर

बुर्जुआ जनवाद : संकीर्ण, पाखण्डपूर्ण, जाली और झूठा; अमीरों के लिए जनवाद और गरीबों के लिए झाँसा

"...केवल संसदीय-सांविधानिक राजतंत्रों में ही नहीं, बल्कि अधिक से अधिक जनवादी जनतंत्रों में भी बुर्जुआ संसदीय व्यवस्था का सच्चा सार कुछ वर्षों में एक बार यह फैसला करना ही है कि शासक वर्ग का कौन सदस्य संसद में जनता का दमन और उत्पीड़न करेगा।" (मार्क्स)

लेकिन अगर हमें राज्य के प्रश्न को लेना है, अगर इस क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग के कार्यभारों की दृष्टि से संसदीय व्यवस्था पर राज्य की एक संस्था के रूप में विचार करना है, तो संसदीय व्यवस्था से निस्तार का रास्ता क्या है? किस तरह उसके बिना काम चलाया जा सकता है?

हमें बार-बार दोहराना चाहिए : कम्यून के अध्ययन पर आधारित मार्क्स की सीखों को इतनी पूरी तरह भुला दिया गया है कि संसदीय व्यवस्था की अराजकतावादी या प्रतिक्रियावादी आलोचना को छोड़कर और कोई भी आलोचना आज के "सामाजिक-जनवादी" (पढ़िये : समाजवाद के आधुनिक गद्दार) की समझ में बिलकुल नहीं आती।

संसदीय व्यवस्था में निस्तार का रास्ता बेशक प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं और चुनाव के सिद्धांत को खत्म कर देना नहीं, बल्कि प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं को गपबाजी के अड्डों से बदलकर "कार्यशली" संस्थाएं बना देना है। "कम्यून संसदीय नहीं, बल्कि एक कार्यशील संगठन था, जो कार्यकारी और विधिकारी, दोनों कार्य साथ-साथ करता था।"

"संसदीय नहीं, बल्कि कार्यशील संगठन"-आज के संसदबाजों और सामाजिक-जनवाद के संसदीय "पालतू कुत्तों के मुंह पर यह भरपूर तमाचा है! अमरीका के स्विट्जरलैंड तक, फ्रांस से इंगलैंड, नार्वे आदि तक चाहे किसी संसदीय देश को ले लीजिये-इन देशों में "राज्य" के असली काम की तामील पर्दे की ओट में की जाती है और उसे महकमे, दफ्तर और फौजी सदर-मुकाम करते हैं। संसदों को "आज जनता" को बेवकूफ बनाने के विशेष उद्देश्य से बकवास करने के लिए छोड़ दिया जाता है।

(लेनिन : राज्य और क्रान्ति)

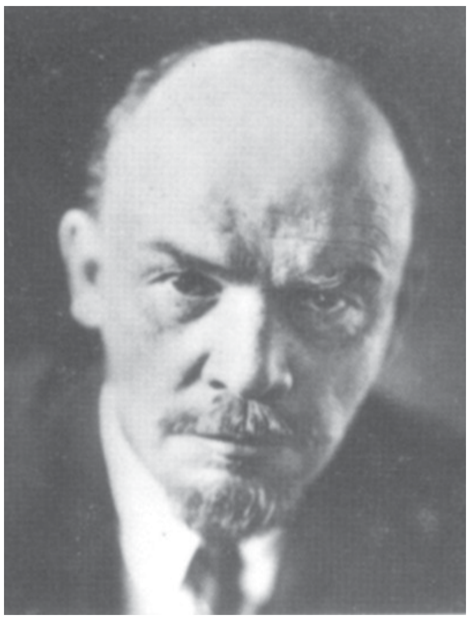

जन्म : 22 अप्रैल 1870 निधन : 21 जनवरी 1924

"...बुर्जुआ समाज की भ्रष्ट तथा सड़ी-गली संसदीय व्यवस्था की जगह कम्यून ऐसी संस्थाएँ कायम करता है, जिनके अन्दर राय देने और बहस करने की स्वतंत्रता पतित होकर प्रवंचना नहीं बनती, क्योंकि संसद-सदस्यों को खुद काम करना पड़ता है, अपने बनाये हुए कानूनों को खुद ही लागू करना पड़ता है, उनके परिणामों की जीवन की कसौटी पर स्वयं परीक्षा करनी पड़ती है और अपने मतदाताओं के प्रति उन्हें प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार होना पड़ता है। प्रतिनिधिमूलक संस्थाएं बरकरार रहती हैं, लेकिन विशेष व्यवस्था के रूप में, कानून बनाने और कानून लागू करने के कामों के बीच विभाजन के रूप में, सदस्यों की विशेषाधिकारपूर्ण स्थिति के रूप में संसदीय व्यवस्था यहां नहीं होती। प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं के बिना जनवाद की, सर्वहारा जनवाद की भी कल्पना हम नहीं कर सकते, लेकिन संसदीय व्यवस्था के बिना जनवाद की कल्पना हम कर सकते हैं और हमें करनी चाहिए, अगर बुर्जुआ समाज की आलोचना हमारे लिए कोरा शब्दजाल नहीं हैं, अगर बुर्जुआ वर्ग के प्रभुत्व के उलटने की हमारी इच्छा गंभीर और सच्ची है, न कि मेंशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की तरह, शीडेमान, लेजियन, सेम्बा और वारडरवेल्डे जैसे लोगों की तरह मजदूरों के वोट पकड़ने के लिए "चुनाव" का नारा भर।"

(लेनिन : राज्य और क्रांति)

"...बुर्जुआ जनवाद, जो सर्वहारा वर्ग को शिक्षित-दीक्षित करने और उसे संघर्ष के लिए प्रशिक्षित करने के वास्ते मूल्यवान है, सदैव संकीर्ण, पाखंडपूर्ण, जाली और झूठा होता है, वह सदा अमीरों के लिए जनवाद और गरीबों के लिए झाँसा होता है।

सर्वहारा जनवाद शोषकों को, बुर्जुआ वर्ग को कुचलता है और इस लिए वह पाखंडपूर्ण नहीं है, स्वतंत्रता तथा जनवाद का उन्हें वचन नहीं देता, लेकिन मेहनतकशों को सच्चा जनवाद देता है। केवल सोवियत रूस ने सर्वहारा वर्ग तथा सारी विशाल मेहनतकश बहुसंख्या को किसी भी बुर्जुआ जनवादी जनतंत्र में अभूतपूर्व, असम्भव तथा अकल्पनीय स्वतंत्रता तथा जनवाद प्रदान किये। यह उसने, उदाहरण के लिए, बुर्जुआ जनों से महल और हवेलियां छीनकर (इसके बिना सभा करने की स्वतंत्रता पाखंड है), पूँजीपतियों से छापेखाने और कागज छीनकर (इसके बिना राष्ट्र की मेहनतकश बहुसंख्या के लिए प्रेस की स्वतंत्रता झूठ है), बुर्जुआ संसदीयता के स्थान पर उन सोवियतों के जनवादी संगठन की स्थापना करके किया, जो सर्वाधिक जनवादी बुर्जुआ संसद की तुलना में जनता के 1,000 गुना अधिक समीप, अधिक जनवादी है, इत्यादि।

(लेनिन : सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्सकी)

हाँ! हमें चुनना ही होगा! जनतंत्र के इस ढकोसले और सच्ची लोकसत्ता के बीच!

(पेज 1 से आगे)

इतनी भी स्थिर नहीं रह पायेगी। भारतीय पूँजीवाद का संकट इसके अलग-अलग तबकों के हितों की टकराहट में व्यक्त हो रहा है। बड़े पूँजीपतियों, क्षेत्रीय पूँजीपतियों, व्यापारियों, फार्मरों, कुलकों आदि शासक वर्गों के अलग-अलग धड़ों के हित एक-दूसरे से टकरा रहे हैं और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली अलग-अलग पार्टियों के आपसी दाँव-घात में प्रकट हो रहे हैं। यह टकराहट और बढ़ेगी ही।

चुनावी बरसात का मौसम आते ही मेढकों की कूद-फाँद शुरू हो गयी है और गिरगिट रंग बदलने लगे हैं। कल तक जो भगवा झण्डे का डण्डा थामे हुए थे वे आज धर्मनिरपेक्षता के अलमबरदार बन गये हैं और जो कल तक धर्मनिरपेक्षता के मसीहा बना करते थे उन्हें आज अटल और आडवाणी के नेतृत्व में भारत उदित होता दिखाई दे रहा है। समाजवाद लाने का टेण्डर पहले ही अम्बानी और सहाराश्री के नाम कर चुके मुलायम सिंह यादव अब बेशर्मी से धर्मनिरपेक्षता की झण्डी-पताका हिलाते हुए भाजपा के तम्बू में बम्बू लगाने का खेल खेल रहे हैं। तमाम पार्टियाँ जो-जो कसरतें कर रही हैं उनका ब्योरा हम 'बिगुल' के पिछले दो अंकों में पहले ही दे चुके हैं। हालत यह है कि हर पार्टी सिनेमा के भांड़-भड़ुक्कों से लेकर हत्यारों-बलात्कारियों-तस्करों-डकैतों तक के सत्कार समारोह आयोजित कर रही है।

पिछले 20-25 वर्षों की राजनीति और अर्थनीति ने यह साफ कर दिया है कि चुनाव की सारी नौटंकी, लोकतंत्र का यह भोंडा नाटक पूँजी के खेल के सिवा कुछ नहीं है। इस खेल के सारे नियम पैसे वालों ने पैसे वालों के लिए बनाये हैं और पैसे वालों की सहूलियत के मुताबिक इन्हें जब-जैसे चाहे तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है। चुनाव के बाद बनने वाली सरकार चाहे इसकी हो या उसकी-वह शासक वर्गों की मैनेजिंग कमेटी ही होती है। यह जनतंत्र पूँजीपतियों का अधिनायकतंत्र ही है। जनता को अपने तथाकथित "प्रतिनिधियों" का चुनाव बस इसीलिए करना है ताकि वे संसद के सुअरबाड़े में बैठकर जनता को दबाने के नये-नये कानून बनायें, निरर्थक बहसें और जूतम-पैजार करें और देशी-विदेशी धनपशुओं की सेवा करते हुए अपनी कई पुश्तों के लिए कमाकर धर दें।

लोकतंत्र का यह नाटक जिस संविधान के नियमों के तहत खेला जाता रहा है उसके तहत और कुछ हो भी नहीं सकता। इस संविधान का निर्माण जिस संविधान सभा ने किया था, उसका चुनाव पूरी जनता ने नहीं बल्कि सिर्फ 15 प्रतिशत कुलीन नागरिकों ने किया था। इस संविधान के तहत निर्धारित चुनाव प्रणाली में ही इस बात का पूरा बन्दोबस्त है कि आम आदमी चुनाव में खड़ा ही नहीं हो सके। दस-दस, बीस-बीस लाख मतदाताओं वाले बड़े-बड़े चुनाव क्षेत्रों में एक साथ उतने लोगों तक पहुंचने के लिए ही लाखों रुपये चाहिए। बड़ी पार्टियाँ और धुरन्धर उम्मीदवार तो एक-एक क्षेत्र पर एक-डेढ़ करोड़ रुपये फूँक डालते हैं। महज शौकिया चुनाव लड़ने वाले सनकी प्रत्याशी भी खाते-पीते घरों के लोग ही होते हैं। पूरे इलाके में दो खटारा जीप दौड़ानी हो तब भी अंटी में एकाध लाख रुपये तो होने ही चाहिए।

यह सारी सच्चाई अब किसी को बताने की जरूरत नहीं रह गयी है। लोग समझ रहे हैं। फिर भी चुनाव का यह तमाशा चलता जा रहा है, लोग इसमें हिस्सा लिये जा रहे हैं-ऐसा क्यों है? असलियत यह है कि चन्द एक परम आशावादी या वज्र मूर्खों को छोड़कर अब किसी को यह उम्मीद नहीं है कि चुनाव से देश के हालात में कोई बड़ा बदलाव होने वाला है और जनता की बुनियादी समस्याएँ सुलझने वाली हैं। लेकिन किसी विकल्प के अभाव में उदासीन भाव से किसी स्थानीय मसले पर, या छोटे-छोटे आश्वासनों पर, या जाति-धर्म पर, या दारू-कम्बल पर जाकर लोग वोट डाल आते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी चुनाव में आस्था है। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें जनता के सामने विकल्प का खाका पेश करना होगा।

इसका विकल्प एक ऐसी चुनाव प्रणाली हो सकती है जिसमें जनता छोटे-छोटे निर्वाचक मण्डलों में अपने प्रतिनिधियों का सीधे चुनाव करेगी। कारखानों में, गांवों-मुहल्लों में, दफ्तरों में लोग अपने बीच से अपने सच्चे प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे। फिर ये प्रतिनिधि अपने ऊपर के प्रतिनिधियों को चुनेंगे और वे अपने ऊपर के प्रतिनिधियों को। इसी तरह से, किसी खर्चीले ताम-झाम के बिना जनता राज-काज-समाज चलाने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनेगी। साथ ही, किसी भी प्रतिनिधि को उसकी मूल इकाई अविश्वास होने पर वापस बुला सकती है, चाहे वह कितने भी ऊँचे स्तर पद पर हो। इस प्रकार, पिरामिड के आकार का एक सच्चा प्रतिनिधिमूलक ढाँचा खड़ा होगा जिस पर जनता का पूरा नियंत्रण होगा। उसके सर्वोच्च शिखर पर बैठा व्यक्ति भी निचले स्तरों तक सीधे जवाबदेह होगा। हर आम आदमी को चुनने और चुने जाने का वास्तविक अधिकार होगा। लेकिन ऐसा वास्तविक जनतंत्र इस पूँजीवादी ढाँचे में सम्भव ही नहीं है।

आज लोग खामोश हैं। सब जानकर भी खामोश हैं। यह दिमागी गुलामी सबसे खतरनाक है। सब कुछ बेबस भाव से बर्दाश्त करते रहना हमें लगातार एक अन्धे गड्ढे की ओर लिये जा रहा है। जिस दिन लोग इस बेबसी से मुक्त हो जयेंगे उस दिन जनज्वार उठेगा जो पूरे ढाँचे को ढहाकर नये विकल्प का रास्ता साफ करेगा।

चीजें अपने आप नहीं बदलती हैं। जीवन कठिन से कठिनतर होता जाता है और मनुष्य असहाय भाव से स्थितियों का इस कदर आदी होता जाता है कि मनुष्यता की शर्तों को भी छोड़ देता है। इससे छुटकारा तभी मिलेगा जब भविष्य के द्वार खोलने के लिए नयी हरावल शक्तियाँ पहल अपने हाथ में लेंगी। वे जनता का विश्वास जीतेंगी और उसे जागृत, संगठित और गोलबन्द करेंगी। फिर इतिहास का निर्माण करने वाली जनता की अदम्य शक्ति बन्धनमुक्त होगी और सब कुछ बदल डालने के लिए उठ खड़ी होगी।

दूसरी तरफ, यह सच है कि परिवर्तन की हरावल शक्तियों को अभी जनता का विश्वास जीतना है। क्रान्तिकारी शक्तियाँ देश ही नहीं विश्व के स्तर पर भी आज पीछे हटी हैं। देश की परिस्थितियाँ और जनता के दिलो-दिमाग को समझने में उनसे गलतियाँ हुई हैं। उन्हें एक बार फिर देश के हालात और जनता की जीवन स्थितियों को समझना होगा, लोगों का विश्वास जीतना होगा। हमें भरोसा है कि क्रान्तिकारी शक्तियाँ ऐसा कर सकती हैं। जनता के सामने फिर से चुनने का सवाल होगा। और तब वह चुनेगी-यथास्थिति और क्रान्ति के बीच, लोकतंत्र के स्वांग और वास्तविक लोकसत्ता के बीच!

हमें उस दिन की प्रतीक्षा नहीं करनी है, उस दिन को करीब लाने के लिए प्रचार, संगठन और संघर्ष के काम में जुट जाना है।

दलदल में हाथी : निकलने की कोशिश में और गहरे धँसता हुआ

इराक में अमेरिका फँसा

इराक पर अमेरिकी-ब्रिटिश सेनाओं का कब्जा हुए साल भर होने को हैं लेकिन कब्जावरों के मंसूबे पूरे होते नजर नहीं आ रहे हैं। अपने वतन को साम्राज्यवादी कब्जे से आजाद कराने के लिए इराकी अवाम की बहादुराना लड़ाई न केवल जारी है वरन अधिकाधिक उग्र और व्यापक होती जा रही है। अब हालत यह हो चुकी है कि कब्जावर इराक से इज्जत बचाकर भागने की फिराक में हैं। भागने की तैयारी में जुटे कब्जावर अब इस कोशिश में एड़ी-चोटी का पसीना एक किये हुए हैं कि अफगानिस्तान की तरह यहाँ भी किसी कठपुतली को हुकूमत सौंपकर जायें। लेकिन कौन नहीं जानता कि दलदल में फंसा हाथी निकलने की कोशिश में और गहरे धंसता जाता है।

पिछले वर्ष 20 मार्च को अमेरिकी अगुवाई में हुए हमले के बाद सद्दाम हुसैन की सत्ता का पतन तो हो गया लेकिन इराकी अवाम ने एक पल के लिए भी हार नहीं मानी। सद्दाम हुसैन की गिरफ्तारी के बाद भी नहीं। इससे यह सच्चाई ही जाहिर होती है कि अब उपनिवेशवाद के दौर को कभी भी वापस नहीं लाया जा सकता है। ऐसा हो सकता है कि हथियारों और पूँजी के जोर पर कोई साम्राज्यवादी मुल्क तीसरी दुनिया के किसी मुल्क पर कुछ समय के लिए कब्जा तो कर ले लेकिन पूरी तरह उसे गुलाम बनाये नहीं रख सकता। आर्थिक नव उपनिवेशवाद के मौजूदा दौर तक पहुँचते-पहुँचते दुनिया की जनता की साम्राज्यवाद विरोधी चेतना इतनी उन्नत हो चुकी है कि वह पुराने समय की साम्राज्यवादी (औपनिवेशिक) गुलामी के जुवे को अपने कंधों पर कभी नहीं लादने देगी।

इराक पर अमेरिकी-ब्रिटिश सेनाओं के कब्जे के बाद से एक पल के लिए कब्जावर चैन की नींद नहीं ले पाये हैं। कब्जे से लेकर अब तक इराकी जनप्रतिरोध के हमलों में अब तक साढ़े पाँच सौ से अधिक अमेरिकी सैनिक मारे गये हैं और लगभग तीन हजार सैनिक बुरी तरह घायल हुए है। ज्यादातर ये हमले या तो अमेरिकी-ब्रिटिश फौजी ठिकानों पर हुए हैं या उन गतिविधियों को निशाना बनाया गया है जिसके जरिये कब्जावर अपनी सत्ता को टिकाऊ बनाने की कोशिशें कर रहे हैं-जैसे फौज-पुलिस के भर्ती केन्द्रों पर। जब से अमेरिकी हुक्मरानों ने अपनी पीछे हटने के लिए कठपुतली सरकार के हाथों में शासन की बागडोर सौंपने के लिए कवायदें तेज की हैं तब से हमलों में और तेजी आयी है।

इराक में कायम अमेरिकी फौजी कमान ने यह दावा किया था कि उनके द्वारा प्रशिक्षित इराकी बलों की मदद के लिये आनन-फानन में अमेरिकी सेना की टुकड़ियाँ देश के किसी भी हिस्से में पहुँच सकती हैं। लेकिन पिछली 15 फरवरी को फाल्लुजा में इराकी प्रतिरोध की ताकतों ने पुलिस कम्पाउण्ड पर जो बड़ा हमला किया उसमें पुलिस वालों की मदद के लिये अमेरिकी सेना की एक भी टुकड़ी मौजूद नहीं थी। इस हमले में 20 पुलिस वाले मारे गये थे और 100 बन्दियों को छुड़ा लिया गया था। आधे घण्टे तक विद्रोहियों और पुलिस बलों के बीच गोलीबारी चलती रही थी लेकिन अमेरिकी सेनाओं का कहीं अता-पता नहीं था। इस घटना के दो दिन पहले इसी कम्पाउण्ड पर छापामारों ने एक और हमला किया था। तब वहाँ पश्चिम एशिया में अमेरिकी फौज के कमाण्डर निरीक्षण पर आये हुए थे। हमले में जनरल जॉन अबिजैद बाल-बाल बचे थे।

इराक पर कब्जा बनाये रखने के लिये अमेरिका को हर महीने 3.9 अरब डालर खर्च करने पड़ रहे हैं जो संकटग्रस्त अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिये भारी पड़ता जा रहा है। उधर इराकी मोर्चे पर खेत रहे सैनिकों के हर नये ताबूत के अमेरिका पहुँचने के साथ ही न केवल सैनिकों के परिवारों में बल्कि आम अमनपसन्द अमेरिकियों के भीतर भी गुस्सा भरता जा रहा है। इस समय इराक में करीब डेढ़ लाख अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। अमेरिकी सरकारी स्रोतों से ही जो आँकड़े सामने आ रहे हैं उनसे पता चलता है कि वियतनाम युद्ध के बाद किसी भी युद्ध में अमेरिका को इतनी जानें नहीं गँवानी पड़ी हैं।

अपने घर-परिवार से दूर रहकर मोर्चे पर लड़ रहे अमेरिकी सैनिकों के भीतर ऊब, थकान, उदासी और अवसाद घर करता जा रहा है। साल भर से अधिक समय से चल रहे इस खूनी खेल में शामिल अमेरिकी सैनिकों का बीस प्रतिशत हिस्सा भीषण तनाव और तरह-तरह की मानसिक बीमारियों की चपेट में आ चुका है। इनके इलाज के नाम पर जो मानसिक रोग चिकित्सक भेजे गये हैं वे इलाज कम ऊपर के अधिकारियों के लिये आम सिपाहियों की मुखबिरी ज्यादा कर रहे हैं। सिपाही अपनी मनःस्थिति के बारे में स्वाभाविक रूप से डाक्टरों को जब बता रहे हैं तो डाक्टर इसकी रिपोर्ट ऊपर के अफसरों को बता दे रहे हैं। इस आधार पर कई सैनिकों का कोर्टमार्शल भी किया जा चुका है। हालत कितनी भयावह है कि इसका अन्दाज इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अब तक बाईस सैनिक आत्महत्याएँ कर चुके हैं।

थोड़े में कहें तो यह कि इराक पर कब्जा अमेरिकी साम्राज्यवादियों के लिये दिन-ब-दिन भारी पड़ता जा रहा है। आर्थिक और फौजी नजरिये से ही नहीं राजनीतिक और सामाजिक नजरिये से भी। कब्जे के साल भर गुजर जाने के बाद भी अमेरिकी हुक्मरान इराक में जनसंहारक हथियार होने के बारे में एक अदना-सा सबूत भी नहीं ढूँढ पाये हैं जिसके आधार पर वे अपने पश्चिमी बिरादरों और अमेरिकी-यूरोपीय अवाम के सामने हमले को जायज ठहरा सकें। हर दिन बीतने के साथ ही यह दिन के उजाले की तरह साफ होता जा रहा है कि इराक पर अमेरिकी हमले और कब्जे के पीछे असली मंसूबे क्या थे। इराक की तेल सम्पदा पर कब्जा करना और पश्चिम एशिया के राजनीतिक-फौजी समीकरण को अपने पक्ष में करना ही हमले की असली वजह थी। जनसंहारक हथियार तो सिर्फ बहाना था।

हमले के पीछे छिपे असली मकसद साफ होते जाने के साथ ही अमेरिकी-यूरोपीय जनता के अन्धराष्ट्रवादी हिस्से के लिये भी अब इराक में अमेरिकी-ब्रिटिश सेनाओं की मौजूदगी को पचा पाना कठिन होता जा रहा है। बीते 20 मार्च को हमले के एक साल पूरे होने पर पूरी दुनिया में जो विरोध प्रदर्शन आयोजित हुए उनमें यूरोपीय अवाम सबसे आगे था। इस नाजायज हमले में अमेरिका का साथ देने के लिये ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर की फजीहत जारी है लेकिन बेशर्म ब्लेयर तरह-तरह की मजाकिया दलीलें देकर आज भी हमले को जायज ठहरा रहा है। उधर बुश भी लगातार नये-नये झूठ गढ़कर हमले को जिस ढंग से जायज ठहरा रहा है वह अब चुटकुलेबाजी का नमूना बनता जा रहा है। हालाँकि अमेरिकी विदेश मंत्री कॉलिन पावेल की आत्मा ने शायद लगातार झूठ बोलने के खिलाफ बगावत कर दी है क्योंकि पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र में भाषण देते हुए उन्हें कहना पड़ा कि इराक में जनसंहारक हथियारों के बारे में उन्हें गलत सूचनाएँ दी गयी थीं।

इराक पर कब्जा जारी रखने के खिलाफ यूरोप में कितना गहरा जनअसन्तोष है इसका उदाहरण पिछले दिनों तब देखने को मिला जब स्पेन के नये प्रधानमंत्री को इराकी मोर्चे से अपनी सेना वापस बुलाने का निर्णय लेना पड़ा।

इराक पर कब्जे के बाद पुनर्निर्माण के नाम पर जिस तरह अमेरिकी कम्पनियों ने सारे ठेके हथिया लिये हैं उससे ब्रिटेन तक नाराजगी जाहिर कर कर रहा है। फ्राँस और जर्मनी ने हमले में साथ नहीं दिया था। कारण था उनके साम्राज्यवादी मंसूबों का टकराना। लेकिन अमेरिकी-ब्रिटिश कब्जे के बाद पुनर्निर्माण के नाम पर लूट की बन्दरबाँट में हिस्सा पाने की उनकी उम्मीदें धराशायी होने के बाद अब वे कब्जे के विरोध में ज्यादा खुलकर बोलने लगे हैं। अमेरिकी और यूरोपीय साम्राज्यवादियों के बीच की यह टकराहट आने वाले दिनों में जब और उग्र होगी तब यह देखना और दिलचस्प होगा कि यह किस अंजाम की ओर ले जाता है। इतिहास गवाह है कि साम्राज्यवादी लुटेरों की आपसी लड़ाई में दुनिया भर में जनता की ताकतों को फायदा ही होता है।

बहरहाल, अमेरिकी साम्राज्यवाद अब किसी तरह इज्जत बचाकर इराक से भागने की फिराक में हैं। इसके लिये अब उन्होंने एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया है कि किसी तरह एक कठपुतली सरकार को हुकूमत सौंप दी जाये। इराक में 'जनतंत्र बहाली' का अमेरिकी फार्मूला यही है। लेकिन यह अमेरिकी 'जनतंत्र' बहुसंख्यक इराकी अवाम को रास नहीं आ रहा है। इराक के सभी धार्मिक, सामाजिक-साँस्कृतिक एवं राष्ट्रीय समूह-समुदाय अमेरिकी फार्मूले का जोरदार विरोध कर रहे हैं। यहाँ तक कि शिया आबादी और कुर्द राष्ट्रीयता भी इसके विरोध में हैं जिनसे अमेरिकी हुक्मरान समर्थन की आस लगाये हुए थे। शियाओं के बीच बेहद लोकप्रिय धार्मिक नेता अयातुल्लाह अली अल सिस्तानी की यह माँग शिया आबादी के बीच जड़ जमा चुकी है कि कोई भी नयी सरकार निष्पक्ष चुनाव के जरिये ही कायम होनी चाहिए। सुन्नी आबादी और कुर्दों के बीच भी यह माँग जोर पकड़ती जा रही है।

दरअसल, अमेरिका यह चाहता है कि औपचारिक 'जनतंत्र बहाली' की निर्धारित तारीख 10 जुलाई को किसी कठपुतली सरकार को सत्ता सौंप दी जाये और उसकी 'देखरेख' में चुनाव कराया जाये। इस मंसूबे को पूरा करने के लिये अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ और 'नाटो' को मोहरा बना रहा है। फरवरी के मध्य में संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान के विशेष दूत लखदर ब्राहिमी मौका मुआयना करने इराक गये थे। अपनी जाँच-पड़ताल के बाद ब्राहिमी ने मीडिया को यह तो बताया कि अधिकांश इराकी जल्दी चुनाव चाहते हैं लेकिन उन्होंने साथ में यह भी जोड़ दिया कि "चुनाव तब होगा जब देश तैयार होगा, और वह सत्ता हस्तान्तरण के बाद होगा।" साफ है कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव के दूत अमेरिकी कठपुतली सरकार कायम होने के हालात की जाँच-पड़ताल करने भेजे गये थे।

अमेरिकी हुक्मरानों की यह हताशाभरी कोशिश कामयाब होती है या नहीं यह जल्दी ही सामने आ जायेगी। अगर-अगर वह कामयाब होता है तो उसकी फिलहाली कामयाबी ही होगी। इराकी अवाम बहुत अधिक दिनों तक अमेरिकी कठपुतली के साये तले जीना कबूल नहीं करेगी। वैसे इराकी प्रतिरोध को देखते हुए फिलहाल, इस बात की सम्भावना को भी पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता कि इज्जत बचाने की कोशिश में कहीं दुनिया के महाबली को दुम दबाकर भागना न पड़ जाये। हालाँकि, इराकी अवाम ने अभी से ही साबित कर दिया है कि साम्राज्यवादी कागजी शेर ही होते हैं।

- अरविन्द

31.1.2004

डब्ल्यू.एस.एफ. : साम्राज्यवाद का नया 'ट्रोजन हॉर्स'

साम्राज्यवाद के एक 'सेफ्टी वाल्व' और 'ट्रोजन हॉर्स' के रूप में काम करने वाले विश्व सामाजिक मंच (डब्ल्यू.एस.एफ.) के चरित्र, संरचना और वर्ग सहयोगवादी राजनीति का भण्डाफोड़ करने वाली एक विचारोत्तेजक पुस्तक। भारत तथा कई देशों के क्रान्तिकारी संगठनों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के आलेखों का संकलन।

पृष्ठ : 208 मूल्य : 50 रुपये

एक तयशुदा मौत

एन.जी.ओ. की कार्यप्रणाली, राजनीति और संस्कृति की असलियत उजागर करने वाला एक बेहद पठनीय और विचारोत्तेजक उपन्यास।

लेखक : मोहित राय बंगला से अनुवाद : रामकृष्ण पाण्डेय

पृष्ठ : 96 मूल्य : 25 रुपये

प्रतियों के लिए जनचेतना के केन्द्रों से संपर्क करें

खाओ-पियो मौज मनाओ
लोकतंत्र की भीड़ में
मारो, पीटो, लूटो, काटो
लोकतंत्र की भीड़ में
तोंद बढ़ाओ, दाँत दिखाओ
लोकतंत्र की भीड़ में
मूँड़ हिलाकर रामनाम लो
लोकतंत्र की भीड़ में
भ्रष्ट आचरण में लग जाओ
लोकतंत्र की भीड़ में
डरे हुओं को और डराओ
लोकतंत्र की भीड़ में
पेड़ लगाओ फीता काटो
लोकतंत्र की भीड़ में
अपनी महिमा अपने गाओ
लोकतंत्र की भीड़ में
मानसरोवर होकर आओ
लोकतंत्र की भीड़ में
धर्म का सिक्का खूब चलाओ
लोकतंत्र की भीड़ में

- रामकृष्ण पाण्डेय

देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच

(गुरुशरण सिंह के मशहूर नाटक `हवाई गोले' पर आधारित)

(एक व्यक्ति ढफली लेकर गाता है-अभिनय के साथ)

देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच
देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच

हाफ पैंटिए आदर्शों की पोल खुल गई आज
पैसे को ये खुदा बतावें, राम को आवे लाज।
एक के पीछे एक तहलका, जोगी पे गिर गई गाज
अफसर नेता जपें तेलगी, बने कोढ़ में खाज।

चोर के पीछे चोर, मोर के पीछे भागे मोर
"मैं नंगा तो तू भी नंगा" सभी मचाते शोर।
नंगे सारे घूम रहे हैं घी में उंगली पांच
देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच।

संसद और विधानसभा में दल्लों की बारात
मंत्री-संत्री-तंत्री के घर नोटों की बरसात।
किसका गिरेबां किसने फाड़ा, किसका दाम चाक
पूँजी के किस टुकड़खोर का चेहरा लगता साफ?

यहां सत्य को झुलस रही है संविधान की आंच
देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच।
देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच।
देख भाई देख फकीरे-2
देख फकीरे लोकतंत्र का फूहड़ नंगा नाच।

(उसके जाने के बाद एक पात्र टीवी की तरह बोलता है))

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा चुनाव संपन्न हो गया है। देश भर में करीब एक हजार जगहों पर बूथ कैप्चरिंग हुई, अनेक स्थानों पर लाठियां और गोलियां भी चलीं। खबर है कि चुनावी हिंसा में करीब 200 लोग मारे गये हैं लेकिन चुनाव अत्यंत शांतिपूर्वक संपन्न हो गये। इस चुनाव के प्रमुख मुद्दे थे...क्या मुद्दे थे... अं-अं-अं... खैर छोड़िये, चुनाव के मुद्दे तो खुद पार्टियों को भी याद नहीं लेकिन सभी ने सभी के धर्म और जाति के हिसाब से वोटों को बटोरने की भरपूर कोशिश की और एक-दूसरे पर जमकर कीचड़ उछाला। इससे पता चलता है कि हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी हैं। तो अब नई लोकसभा का अधिवेशन शुरू होने ही वाला है। आशा की जाती है कि इस सत्र में सरकार और विपक्ष के बीच काफी गरमागरमी होगी।

(अध्यक्ष, सरकार और विपक्ष का प्रवेश। दर्शकों का और एक-दूसरे का अभिवादन करने के बाद अध्यक्ष सीटी बजाता है)

विपक्ष : अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार पर गंभीर आरोप लगाना चाहता हूं।

सरकार : विपक्ष का काम सिर्फ सवाल पूछना है, आरोप लगाना नहीं। आप सवाल पूछिए, सरकार जवाब देने के लिए तैयार है।

विपक्ष : आपकी सरकार ने भ्रष्टाचार के सारे रिकार्ड तोड़ दिये हैं। आपने लोकतंत्र के तमाम सिद्धांतों को तोड़ डाला है।

सरकार : राजनीति में सिद्धांतों का उपयोग ही यही है कि काम न आने पर उन्हें तोड़ दिया जाये। जहाँ तक भ्रष्टाचार की बात है, उसके रिकार्ड तो आप पहले ही तोड़ चुके हैं। आपके तो प्रधानमंत्री ने ही कहा था कि एक रुपये में से बस 15 पैसे जनता तक पहुंचते हैं। 85 पैसे बीच में ही खा लिये जाते हैं।

विपक्ष : पर आपकी सरकार तो पूरा रुपया ही खा जा रही है। आपके तो मंत्री ही रिश्वत खाते हैं।

सरकार : ये झूठ है।

विपक्ष : ये सच है। मेरे पास सबूत है।

सरकार : कैसा सबूत?

विपक्ष : हमारे पास इसका वीडियो टेप है।

सरकार : (वीडियो सुनते ही उछलकर) वीडियो! नहीं...नहीं, हमको वीडियो से बहुत डर लगता है। अभी तो तहलका वाले वीडियो का धमाका बड़ी मुश्किल से दबाया है, ये नया वीडियो कहां से आ गया। वीडियो मत दिखाओ।

विपक्ष : देखना तो आपको पड़ेगा ही, अब तो सारी जनता भी देखेगी-ये देखिये...

(दोनों किनारे हो जाते हैं। दो व्यक्ति आते हैं।)

जूदेव : (मूंछें ऐंठते हुए) हा-हा-हा, भई वाह, सोमरस तो आपने बहुत बढ़िया पिलाया। मजा आ गया। असली विदेशी माल लगता है।

दूसरा : यस सर। हमारी मल्टीनेशनल कंपनी ने आपके लिए खास तौर पर भिजवाया था। हम तो डर रहे थे कि कहीं आप रिजेक्ट न कर दें। आप हमेशा स्वदेशी की बात करते हैं-

जूदेव : (मूंछें ऐंठकर) हा-हा-हा, अरे स्वदेशी-वदेशी तो पब्लिक के वास्ते है। अपनी पसंद तो विलायती ही है। हां, तो काम की बात हो जाए।

दूसरा : यस सर। सर, हमारी कंपनी आपके देश में कुछ खदानें ठेके पर लेना चाहती है। पर दुनियाभर के पचड़े हैं। और वो क्या कहते हैं-परियावरन-फरियावरन की क्लियरेंस लेनी पड़ती है। अरे सर, इन इलाकों में रहता ही कौन है, जंगली आदिवासियों के दो-चार गांव तबाह ही हो जाएं तो क्या फर्क पड़ जाएगा।

जूदेवः (मूंछें ऐंठकर) हा-हा-हा।

दूसरा : तो सर, आपकी मदद चाहिए।

जूदेव : (मूंछें ऐंठकर) हा-हा-हा। हो जाएगा काम। मेरी मिनिस्ट्री का तो समझो हो ही गया, और उधर का चीफ मिनिस्टर भी अपना है, उसे भी मैं देख लूंगा। हा-हा-हा...

दूसरा : थैंक्यू सर, थैंक्यू वेरी मच। (बैग में से नोटों की गड्डियाँ निकालता है) सर, ये हमारी कंपनी की तरफ से छोटा सा तोहफा है आपके लिए-

जूदेव : (मूंछें ऐंठकर) हा-हा-हा! थैंक्यू-2। (नोटों की गड्डियों को माथे से लगाता है) पैसा खुदा नहीं, पर खुदा कसम खुदा से कम भी नहीं। हा-हा-हा!

(गले में हाथ डालकर दोनों बाहर जाते हैं)

विपक्ष : (चीखकर) अध्यक्ष महोदय, देखा आपने! इन्होंने तो बेशर्मी की हदें पार कर दी हैं। सरकार को फौरन इस्तीफा देना चाहिए।

सरकारः ये विपक्ष की साजिश है। हमारे भोले-भाले मंत्री को फंसाया गया है।

विपक्ष : आपके मंत्री कितने भोले-भाले हैं ये तो हमने टेप में देख ही लिया है। ऐसे मंत्री को तो फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए।

(एक व्यक्ति आकर सरकार के कान में कुछ कहता है। और कुछ थमाता है)

सरकार : हा-हा-हा! अब देखते हैं कौन गिरफ्तार होता है।

विपक्षः क्या मतलब?

सरकार : मतलब यह है कि आपने हमें वीडियो दिखाया अब हम आपको एक ऑडियो सुनाएंगे।

विपक्ष : ये क्या मजाक है?

सरकार : अभी पता चल जाएगा, लो सुनो-

(किनारे जाते हैं। दो व्यक्ति फोन पर बात करते हैं)

एक : हलो पांडे जी, मैं संन्यासी बोल रहा हूं।

दो : नमस्कार संन्यासी जी! बोलिए।

एक : अजी आप तो जानते ही हैं, सरकार बनाने के लिए 10 एमएलए कम पड़ रहे हैं। क्या भाव मिल जाएंगे?

दोः देखिए, दो-चार निर्दलीय चाहिए तो मैं फुटकर रेट पर जुगाड़ कर दूं, लेकिन आपको तो थोक में चाहिए-पार्टी तोड़नी पड़ेगी। आप तो जानते ही हैं कि पोलटिक्स में उल्टा बाजार भाव चलता है। फुटकर का रेट कम, थोक का ज्यादा।

एक : फिर भी, कुछ तो बताइए।

दो : एक-एक करोड़ नगद, पांच को मंत्री पद, पांच को निगम अध्यक्ष का पद।

एक : अरे, ये तो बहुत ज्यादा है, पिछली बार तो 50-50 लाख में खरीदे थे।

दो : संन्यासी जी, तबसे खर्चा कितना बढ़ गया है। एक-एक बूथ कैप्चर करने में 1-2 लाख लग जाता है। साले वोटरों को मुर्गा और दारू बंटवाने में ही इस बार दस-दस लाख निकल गये।

एक : अरे तो क्या सारा हमीं से वसूल लोगे? पांच साल राज करोगे तो इससे 50 गुना कमा लोगे। 75-75 लाख में सौदा पटा लो। 25-25 लाख कल सुबह पहुंच जाएगा, बाकी सब हम देख लेंगे। मैडम का आशीर्वाद रहा तो सब ठीक हो जाएगा।

दो : चलिए इस विधानसभा की बोहनी का वक्त है, ज्यादा मोलभाव नहीं करूँगा।

एक : तो बात तय रही।

दो : हाँ जी, जय सियाराम।

एक : जय मैडम।

(जाते हैं)

सरकार : सुन लिया आपने? अब क्या कहते हैं आप?

विपक्ष : अध्यक्ष जी, ये सरकार की साजिश है। सरकार खुद को बचाने के लिए हमें फंसा रही है।

सरकार : अरे! साजिश करने में हम तुमसे कम नहीं हैं। हमारा तो साजिश रचने का 70 साल का तजुरबा है। पर अब तुम नहीं बचोगे।

विपक्ष : हम इस कांड की संसदीय समिति से जांच की मांग करते हैं।

सरकार : हम इस मांग को नहीं मान सकते। अभी हमारा पालतू कुत्ता इस मामले की जांच कर रहा है।

विपक्ष : आपका पालतू कुत्ता तो सिर्फ विपक्ष को काटता है। आपको संसदीय समिति से जांच की मांग माननी होगी। आपकी सरकार ने जो घोटाले किये उनकी भी रिपोर्ट नहीं दिखाई। घोटाले के हजारों करोड़ रुपये कहां गये।

सरकार : सीधी सी बात आपकी मोटी अकल में नहीं घुसती? अरे, घी कहाँ गया-खिचड़ी में! (कान में) इस पर ज्यादा मत चिल्लाओ। वरना तुम्हारे सारे घोटालों के राज खोल दूँगा।

विपक्ष : तुम धूर्त हो।

सरकार : तुम महाधूर्त हो।

विपक्ष : तुम भ्रष्ट हो।

सरकार : तुम महाभ्रष्ट हो।

विपक्ष : तुम जूदेव हो।

सरकार : तुम जोगी हो।

विपक्ष : तुम भोगी हो।

सरकार : तुम रोगी हो।

विपक्ष : (चीखकर) तुम नंगे हो।

सरकार :तुम नंगे हो।

विपक्ष : तुम नंगे।

सरकार : तुम नंगे।

(तुम नंगे-तुम नंगे करते-करते भिड़ जाते हैं। अध्यक्ष सीटी बजाकर दोनों को अलग करता है।)

अध्यक्ष : इस प्रश्न का समय समाप्त। राजनीति के इस हमाम में हम सभी नंगे हैं।

(सरकार-विपक्ष हाथ मिलाकर अलग)

विपक्ष : मैं पूरक प्रश्न पूछने की अनुमति चाहता हूं।

अध्यक्ष : अनुमति है।

विपक्ष : तहलका कांड की जांच की क्या स्थिति है।

सरकार : अभी प्रधानमंत्री के निर्देश पर एक विशेष जाँच कमीशन मामले की जांच कर रहा है। फिर विभागीय स्तर पर जांच होगी, फिर खुफिया जांच होगी, फिर मंत्रिमंडलीय जांच होगी, फिर संसदीय जांच होगी, फिर न्यायिक जांच होगी, फिर सरकार इन सब रिपोर्टों पर विचार करेगी, और फिर हम उन सभी रिपोर्टों का तकिया बनाकर सो जायेंगे।

विपक्ष : मगर यह सारी प्रक्रिया कब तक पूरी होगी?

सरकार : फिर वही बेवकूफी भरा सवाल! तब तक जब तक मामला ठंडा न पड़ जाये।

विपक्ष : तब तक हम किसी नये मुद्दे का इंतजार करेंगे।

सरकार : सरकार विपक्ष से ज्यादा इंतजार नहीं कराएगी।

विपक्ष : अगला घोटाला कब तक?

सरकार : बहुत जल्दी। मगर हम ठीक-ठीक समय नहीं बता सकते।

विपक्ष : मगर ऐसा कब तक चलेगा।

सरकार : ऐसा तो चलता ही रहेगा।

विपक्ष : हम ऐसे नहीं चलने देंगे।

सरकार : हम ऐसे ही चलेंगे।

(दुहराते हुए भिड़ जाते हैं। अध्यक्ष सीटी बजाता है। तीनों पीछे जाते हैं। कुछ लोग नारे लगाते हुए आते हैं।)

एक : छंटनी-तालाबंदी बंद करो!

दूसराः बेरोजगारी दूर करो!

एक : हर हाथ को काम दो, वरना गद्दी छोड़ दो।

दूसरा : ये कैसी आजादी है, ये किसकी आजादी है।

एक : जनता के हिस्से में केवल, लूट और बर्बादी है।

(एक व्यक्ति बोलता है।)

साथियों, एक के बाद एक कारखाने बंद हो रहे हैं, लोगों को नौकरियों से निकाला जा रहा है, चारों ओर ठेकेदारी का राज है। मेहनतकशों की बर्बादी है, धन्नासेठों की चांदी है। हमारे घरों में बच्चे दूध के लिए बिलखते हैं-उनकी पार्टियों में शराब के जाम छलकते हैं। हम अब और बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम लड़ेंगे, हम अपना हक लेकर रहेंगे-चलो साथियो।

(सब बढ़ते हैं-तभी सामने से सरकार का इशारा-अध्यक्ष और विपक्ष पुलिस की टोपी पहनकर लाठीचार्ज करते हैं। सब गिरते हैं। अध्यक्ष, सरकार और विपक्ष वापस पीछे आते हैं, टोपियां बदलते हैं। गिरे हुए लोग उठकर जाते हैं। तीनों फिर आते हैं।)

अध्यक्ष : सदन का प्रश्नकाल शुरू।

विपक्ष : देश में चारों ओर जनता में असंतोष बढ़ रहा है। लोग छंटनी-तालाबंदी-बेरोजगारी से परेशान हैं। महंगाई ने उनकी कमर तोड़कर रख दी है। सरकार इस बाबत क्या कर रही है?

सरकार : सरकार को अभी इन तुच्छ समस्याओं के बारे में सोचने की फुरसत नहीं है। अभी हम देश ही नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी समस्या पर चिंतन कर रहे हैं।

विपक्ष : वह क्या?

सरकार : आतंकवाद।

विपक्ष : हां, इस मामले में तो हम भी पूरी

तरह आपके साथ हैं।

सरकार : फिर आपको जनता का असंतोष कहां से नजर आने लगा? ये छोटी-मोटी बातों को लेकर हंगामा खड़े करने वाले लोग देश के दुश्मन हैं, आईएसआई के एजेंट हैं-ऐसे आतंकवादियों को हमारी सरकार कुचल कर रख देगी। और अब तो हमारे हाथों में पोटा का सोटा भी आ गया है। अब कोई बच नहीं पायेगा।

(उछलकर गदा भांजने का अभिनय करने लगता है। विपक्ष कूदकर पीछे हटता है।)

विपक्ष : देखिये-देखिये, इस सोटे का इस्तेमाल जरा संभलकर करिए-पहले ही अपने कुछ लोगों को चोट लग चुकी है। ज्यादा गड़बड़ हुई तो हमें मजबूरन आंदोलन करना पड़ेगा।

सरकार : (गदा कंधे पर रखकर) हमें किसी का डर नहीं है। बुश चाचा और ब्लेयर मामा का हाथ हमारी पीठ पर है।

विपक्ष : हां-हां, अल्ला मेहरबान तो गधा पहलवान।

सरकार : क्या कहा।

विपक्ष : कुछ नहीं-कुछ नहीं। मगर भुखमरी, महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी को रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है?

सरकार : सरकार भारत उदय कर रही है।

विपक्ष : देश की जनता बदहाली से पस्त हो रही है, करोड़ों गरीबों के जीवन का सूरज अस्त हो रहा है और आपका भारत उदय हो रहा है?

सरकार : (क्लोजअप के विज्ञापन की धुन पर गाते हुए)

आप कोकाकोला पीते हैं
बात मोबाइल पे करते हैं
और कार पे चलते हैं
तो आप फील गुड क्यों नहीं करते हैं...
आप फील गुड क्यों नहीं करते हैं?

विपक्ष : (उसी अंदाज में)
दो रोटी को तरसते हैं
सड़कों पे बेकार टहलते हैं
दंगे में भी मरते हैं
और सुसाइड भी करते हैं
तो फील गुड कैसे करते हैं...
तो फील गुड कैसे करते हैं?

सरकार : ये क्या मजाक है? विपक्ष हमारी नकल कर रहा है।

विपक्ष : वाह! आप गाना गायें तो कवि प्रधानमंत्री कहलाएँ और हम गायें तो मजाक हो जाए?

सरकार : बस! अब गाना-वाना नहीं चलेगा।

विपक्ष : ठीक है, तो हमारे सवाल का सीधा-साधा जवाब दीजिए। भुखमरी, बढ़ती बेरोजगारी को रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है? इस सवाल पर हम खामोश नहीं रह सकते। गोदामों में अनाज सड़ रहा है और लोग भूख से मर रहे हैं। गरीबी से तंग आकर लोग अपने बच्चों को सौ-सौ रुपये में बेच रहे हैं। सरकार के लिए यह शर्म की बात है।

सरकार : अरे वाह, बच्चे बेचें वो और शर्म आये हमें। अच्छा मजाक है। बहरहाल, हमने अपनी दरियादिली का परिचय देते हुए घोषणा की है कि गोदामों में सड़ रहे अनाज को भूखे लोगों तक पहुँचा दिया जाए। हमने इसके लिए एक विशेष पैकेज भी घोषित किया है-पूरी तरह सड़ा अनाज एक चौथाई दाम पर, आधा सड़ा अनाज आधे दाम पर दिया जाएगा। दो किलो सड़ा चावल लेने पर आधा किलो सड़ा गेहूं मुफ्त दिया जाएगा।

विपक्ष : तो क्या लोगों तक यह अनाज पहुंचा?

सरकार : नहीं पहुंचा।

विपक्ष : क्यों नहीं पहुंचा?

सरकार : क्योंकि उन कंगलों के पास खरीदने के लिए पैसे ही नहीं हैं।

विपक्ष : पैसे क्यों नहीं हैं?

सरकार : क्योंकि उनके पास रोजगार नहीं है।

विपक्ष : रोजगार क्यों नहीं हैं?

सरकार : क्योंकि लोग काम करना नहीं चाहते।

विपक्ष : लोग काम करना नहीं चाहते या आपकी सरकार लोगों को काम दे नहीं सकती?

सरकार : हमने इस विषय में भी एक कमीशन नियुक्त करने का निर्णय लिया है।

विपक्ष : वो किसलिए?

सरकार : यह देखने के लिए कि बेरोजगारी बढ़ी है तो कितनी बढ़ी है।

विपक्ष : इसके लिए कमीशन बैठाने की क्या जरूरत है? अखबारों में रोज ही आँकड़े छपते हैं रहते हैं।

सरकार : सरकार अखबारी आंकड़ों से नहीं चलती। वह अपने आंकड़े खुद इकट्ठा करती है।

विपक्ष : वह किस तरह?

सरकार : सरकार सबसे पहले इलाके के कमीश्नर से पूछती है। कमिश्नर कलक्टर से पूछता है, कलक्टर तहसीलदार से पूछता है, तहसीलदार कानूनगो से पूछता है, कानूनगो लेखपाल से पूछता है और-

विपक्ष : लेखपाल किसी से नहीं पूछता।

सरकार : सरकार इसी तरह कायदे से काम करती है।

विपक्ष : मगर इस तरह आंकड़े इकट्ठा करने में कितना समय लगता है?

सरकार : कायदे-कानून से काम करने में समय तो लगता ही है।

विपक्ष : मगर जितने समय में वे आंकड़े इकट्ठा होते हैं उतने में बेरोजगारी और नहीं बढ़ जाती?

सरकार : बढ़ जाती है, जरूर बढ़ जाती है।

विपक्ष : फिर सरकार क्या करती है?

सरकार : सरकार दोबारा आंकड़े इकट्ठा करती है। वह दोबारा कमिश्नर को लिखती है।

विपक्ष : कमिश्नर फिर कलक्टर से पूछता है, कलक्टर तहसीलदार से, तहसीलदार कानूनगो से, कानूनगो लेखपाल से और लेखपाल किसी से नहीं पूछता! ये क्या मजाक है?

सरकार : कायदा तो कायदा है, जो कोई इसे मजाक समझे ये उसकी बेवकूफी है।

विपक्ष : बेवकूफ तुम हो!

सरकार : तुम गधे हो!

विपक्ष : तुम लोमड़ी हो!

सरकार : तुम सुअर हो!

विपक्ष : तुम कुत्ते हो!

सरकार : तुम खुजली वाले कुत्ते हो!

(कुत्ते हो-कुत्ते हो दुहराते हुए भिड़ जाते हैं। अध्यक्ष की सीटी का भी असर नहीं होता। तभी पीछे से नारों की आवाज आती है-)

हत्यारी सरकार गद्दी छोड़ो-2

सबको शिक्षा सबको काम वरना होगी नींद हराम।

भगतसिंह को याद करेंगे-जुल्म नहीं बर्दाश्त करेंगे।

(सब फ्रीज हो जाते हैं। विपक्ष तांक-झांक करके आता है।)

विपक्ष : बेरोजगारी से तंग आकर एक नौजवान ने आत्महत्या कर ली है। उसके हजारों साथियों ने संसद भवन को घेर लिया है-वो काफी गुस्से में हैं।

सरकार : सरकार उन भटके हुए नौजवानों के आक्रोश को शांत करने का पूरा प्रयास करेगी।

विपक्ष : और अगर वो शांत नहीं हुए तो।

सरकार : तो ऐसे लोगों को शंत करने के और भी तरीके हमें आते हैं। बहरहाल इस नौजवान की असमय मृत्यु का हमें गहरा अफसोस है। प्रधानमंत्री राहत कोष से मृतक के परिवार वालों को ग्यारह रुपये नगद दिये जाते हैं।

विपक्ष : ये नौजवान सरकार की गलत नीतियों के कारण मरा है। उसकी मौत के जिम्मेदार आप हैं।

सरकार : जी नहीं, उसने खुदकुशी की है। अपनी मौत का जिम्मेदार वह खुद है।

विपक्ष : उसने आत्महत्या इसलिए की क्योंकि वह बेरोजगार था।

सरकार : वह बेरोजगार इसलिए था क्योंकि वह अयोग्य था।

विपक्ष : वह अयोग्य इसलिए था क्योंकि सरकार ने कॉलेजों में फीस इतनी बढ़ा दी है और सीटें इतनी कम कर दी हैं कि आम आदमी के बच्चे पढ़ ही नहीं सकते।

सरकार : हम इसका भी इंतजाम कर रहे हैं। सबको पढ़ने की जरूरत ही क्या है? अभी कोका कोला के एक हजार नये ठेले और मैकडोनाल्ड के पांच सौ नये फास्टफूड काउंटर खोले गये हैं। लाल-पीली टोपी लगाकर लड़के-लड़कियां कितने अच्छे लगते हैं। देखा है आपने? उस नौजवान को कुछ दिन और इंतजार कना चाहिए था।

विपक्ष : सरकार उसकी मौत की जिम्मेदारी से बच नहीं सकती।

सरकार : देखिये, टेक्नीकली, उस लड़के ने आत्महत्या की है। अगर वह बच जाता तो हम आत्महत्या के प्रयास के जुर्म में उसे एक साल की सजा दिलवाते।

विपक्ष : उसकी मौत के जिम्मेदार आप हैं।

सरकार : ये गलत है। मैं अपने पक्ष में सौ सबूत दे सकता हूँ।

विपक्ष : मैं एक हजार सबूत दे सकता हूँ।

सरकार : मैं दस हजार दे सकता हूँ।

विपक्ष : मैं एक लाख दे सकता हूं।

सरकार : तो दीजिए-

विपक्ष : (हकलाने लगता है) अबब...ये..ये..

सरकार : हम इस विषय पर कमीशन बैठाने के लिये तैयार हैं।

विपक्ष : पर हम न्यायिक जाँच की माँग करते हैं।

सरकार : सरकार यह मांग नहीं मान सकती।

विपक्ष : सरकार को यह मांग माननी पड़ेगी। नहीं तो हम आन्दोलन करने को मजबूर होंगे।

सरकार : किस तरह का आन्दोलन?

विपक्ष : हम देशभर में पदयात्रा करेंगे।

सरकार : हम इसके जवाब में रथयात्रा निकालेंगे।

विपक्ष : हम ट्रक यात्रा निकालेंगे।

सरकार : हम बस यात्रा निकालेंगे।

विपक्ष : हम बैलगाड़ी यात्रा निकालेंगे।

सरकार : हम घोड़ागाड़ी यात्रा निकालेंगे।

विपक्ष : हम तांगायात्रा निकालेंगे।

सरकार : हम हाथी यात्रा निकालेंगे।

विपक्ष : हम यह सब नहीं चलने देंगे।

विपक्ष : हम यह सब नहीं चलने देंगे।

सरकार : हम तो ऐसे ही चलेंगे।

सरकार : हम तो ऐसे ही चलेंगे।

विपक्ष : हम जनता की आवाज हैं।

सरकार : जनता की आवाज हम हैं।

विपक्ष : हम हैं।

सरकार : हम हैं। (हम हैं-हम हैं का शोर भौं-भौं-भौं बन जाता है।

अध्यक्ष पूर्ववत रेफरी की मुद्रा में। अचानक तीन-चार लोगों का प्रवेश। तीनों उनकी आवाज से चौंककर, घबराकर एक-दूसरे से सट जाते हैं। अध्यक्ष की सीटी गिर जाती है।)

एक : चुप रहो। तुम कुछ नहीं, फालतू बकवास हो।

दूसरा : बेसुरे साज हो।

तीसरा : पूँजीपतियों के टट्टू हो।

चौथा : साम्राज्यवादियों के टुकड़खोर हो।

पहला : बरसों जिन्दगी तड़पती रही और तुम फुलझड़ियां छोड़ते रहे।

दूसरा : बरसों जिन्दगी सड़ती रही और तुम सवाल-जवाब करते रहे।

सरकार : तुम हमारा सवाल-जवाब करने का अधिकार नहीं छीन सकते।

विपक्ष : हम यहाँ आये ही इसलिए हैं कि हम सवाल करें और ये जवाब दें।

तीसरा : तो फिर बात तो वहीं की वहीं रही।

सरकार : प्रजातंत्र में ऐसा ही होता है। एक सवाल करता है, दूसरा जवाब देता है।

पहला : तुम्हारा प्रजातंत्र एक धोखा है।

दूसरा : पैसे वालों का खेल है।

सरकार, विपक्ष और अध्यक्ष : और हम इस खेल के विजेता हैं। हमें बहुमत ने चुना है कि हम तुम्हारे ऊपर हुकूमत करें।

तीसरा : बहुमत ने नहीं सिर्फ कुछ लोगों ने।

विपक्ष : वह किस तरह?

पहला : वह मैं बताता हूँ।

सरकार : तुम?

पहला : हाँ, मैं। एक स्कूल टीचर। देश की करोड़ों की आबादी में से सिर्फ पचास फीसदी लोगों के वोट बनते हैं और उसमें से भी औसतन पचास-साठ फीसदी लोग वोट डालने जाते हैं। जीतने वाली पार्टी को औसतन कुल डाले गये वोटों का 30 फीसदी हिस्सा ही हासिल होता है। इस तरह हम पर हुकूमत करने वाली तुम्हारी सरकारें देश की पूरी आबादी के सिर्फ 8 या 9 फीसदी हिस्से की नुमाइन्दगी करती हैं।

चौथा : हम तुम्हारा प्रजातंत्र बर्दाश्त नहीं कर सकते।

सरकार : तुम्हें करना ही पड़ेगा।

तीसरा : और जो न करें तो?

सरकार : तो हमारी फौज, हमारी पुलिस तुम्हें कुचलकर रख देगी।

दूसरा : कितनों को कुचलेगी।

सरकार : जितने सर उठायेंगे।

पहलाा : देखा जायेगा।

चौथा : आओ साथियो। (आगे बढ़ते हैं)

(सरकार, विपक्ष, अध्यक्ष एकदम भयाक्रांत)

विपक्ष : देखो भाइयो। कानून को अपने हाथ में मत लो।

पहला : कौन सा कानून?

सरकार : वही कानून जो हमने तुम्हारे लिये बनाया है।

दूसरा : वही कानून जो गरीबों की इज्जत लूटता है?

तीसरा : वही कानून जो पैसों पर बिक जाता है?

चौथा : वही कानून जो लोगों को भूखों मारता है?

पहला : वही कानून जो लोगों को बिना दवा-इलाज के तड़पा-तड़पा कर मारता है।

दूसरा : वही कानून जो लोगों पर गोलियाँ चलवाता है?

तीसरा : हम ऐसे कानून को नहीं मानेंगे।

चौथा : आओ साथियो!

(विपक्ष-सरकार-अध्यक्ष धराशायी)

पहला : देखा साथियो! इनकी जड़ें हिल रही हैं।

दूसरा : इनकी जड़ें थीं ही कब?

तीसरा : हम समझते थे कि ये बड़े मजबूत हैं।

चौथा : हाँ ये तभी तक मजबूत हैं जब तक हम कमजोर हैं।

(त्रिगुट उठने की कोशिश करता है)

सरकार : उठ भाई। तू उठेगा तभी तो मैं उठूँगा।

विपक्ष : नहीं पहले तू उठ, तेरे ही सहारे तो मैं खड़ा था।

अध्यक्ष : अरे, तुम्हीं दोनों तो मेरी दो टागें थे। तुम ही गिर पड़े तो अब मेरा क्या होगा?

सरकार : तुमने हमें तो गिरा दिया अब खड़ा किसे करोगे?

पहला : तुम्हें इसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं। हम एक नया समाज बनायेंगे। हम इस जालिम बर्बर सामाजिक ढांचे को ही नष्ट कर देंगे।

दूसरा : अब हम एक ऐसा भारत बनायेंगे जिसमें उत्पादन, राजकाज और समाज के पूरे ढांचे पर उत्पादन करने वाले वर्गों का नियंत्रण होगा।

तीसरा : हम साम्राज्यवाद और पूँजीवाद के जुए को अपने कंधों से उतार फेंकेंगे।

सभी : हम शहीदेआजम भगतसिंह के सपनों के भारत का निर्माण करेंगे। हम मेहनतकश का लोकस्वराज्य बनायेंगे।

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - 71980/99, डाक पंजीयन संख्या - LW-NP/349/2003

मेहनतकशों के लिए जरूरी असली 'जनरल नालेज'

चुनाव क्या है?	जनता की गाढ़ी कमाई के अरबों रुपये खर्च करके जनता के ही साथ धोखाधड़ी!
चुनावी नेता क्या हैं?	पूँजीपतियों के कुत्ते, साम्राज्यवादियों के टट्टू!
आज चुनावी पार्टियों के सफल नेता कौन हो सकते हैं?	चोर, पाकेटमार, ठग, बटमार, तस्कर, दंगाई, गुण्डे, व्यभिचारी, लोफर-आवारा, दलाल, ठेकेदार, सिनेमा के भांड़, खूनी, माफिया सरगना और धर्म के व्यापारी!
संसद क्या है?	सुअरबाड़ा! गुण्डों-डकैतों-व्यभिचारियों-भ्रष्टाचारियों का अड्डा। यही आज के पूँजीपतियों के राजनीतिक प्रतिनिधि हैं!
वोट कैसे पड़ते हैं?	जाति-धरम पर जनता को बांटकर, दंगे भड़काकर, नोटों से खरीदकर, बंदूकों से डराकर, गरीबों को लालच देकर!
संसद-विधानसभाओं में क्या होता है?	कुछ दिखावटी बहसें, मारपीट, जूतम-पैजार, और असली काम होता है जनता को लूटने-कुचलने के कानून बनाने का।
सरकार क्या करती है?	देशी-विदेशी पूँजीपतियों की सेवा, उनकी लूट को बढ़ाना और व्यवस्थित करना, जनता को कुचलना, धोखा देना।
भारतीय जनतंत्र क्या है?	पूँजीपतियों की तानाशाही!
तथाकथित जनतांत्रिक संस्थाएँ और न्यायपालिका क्या हैं?	पूँजीवादी शासन के दिखाने के दाँत!
और खाने के दाँत?	फौज, पुलिस, जेल, नौकरशाही!
न्यायपालिका क्या करती है?	थैलीशाहों के हित में न्याय का व्यापार!
पूँजीवादी न्याय के बुनियादी सिद्धान्त क्या हैं?	पूँजीवादी न्याय की नजर में गरीब होना ही एक अपराध है! शोषण पूँजीपतियों का जन्मसिद्ध अधिकार है! जुल्म को चुपचाप सहना शरीफ नागरिक का गुण है। जुल्म का विरोध सबसे संगीन जुर्म है!

इस पूरे ढांचे का विकल्प क्या है?

जुल्म के खिलाफ मेहनतकशों और आम लोगों की एकता!
इंकलाबी संगठनों का निर्माण! मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ आम बगावत!
पूंजीवाद का नाश!
समाजवाद के उसूलों पर, न्याय और समता पर आधारित समाज की रचना!

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी डा. दूधनाथ द्वारा 69, बाबा का पुरवा, निशातगंज, लखनऊ से प्रकाशित एवं उन्हीं के द्वारा वानी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ से मुद्रित। कम्पोजिंगः कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ।
सम्पादकः डा. दूधनाथ, मुकुल ● सम्पादकीय पताः 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006 ● सम्पादकीय उपकार्यालयः जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ